वाट्सऐप @ 94140-78380, 92140-78380 | वर्ष :5 अंक : 174 | शुक्रवार 17 अक्टूबर 2025 | दैनिक ई-पेपर

शाबाश इंडिया

@ShabaasIndia | प्लॉट नंबर 8, ओझा जी का बाग, गांधी नगर मोड, टोंक रोड, जयपुर

राज्य सरकार ने 22 अक्टूबर तक बढ़ाई सहकार सदस्यता अभियान की अवधि

अब तक लगभग 8,500 पैक्स के स्तर पर हुआ शिविरों का आयोजन, 8.71 लाख से अधिक नए सदस्य बने, 1,688 ग्राम पंचायतों में पैक्स गठन के लिए सर्वे की कार्यवाही पूर्ण, 1,340 सहकारी समितियों में गोदाम निर्माण के लिए हुआ भूमि का चिन्हीकरण

जयपुर. का.स

सहकारिता राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) गौतम कुमार दक ने बताया कि सहकार सदस्यता अभियान के अंतर्गत प्राप्त हुए बेहतर परिणामों के दृष्टिगत राज्य सरकार ने अभियान की अवधि 22 अक्टूबर, 2025 तक बढ़ा दी है। उन्होंने बताया कि 18 एवं 20 अक्टूबर के अवकाश को छोड़कर शेष दिवसों में पैक्स में शिविर लगाए जा सकेंगे। पूर्व में अभियान की अवधि 2 से 15 अक्टूबर तक निर्धारित की गई थी। दक ने बताया कि अभियान के अंतर्गत अब तक लगभग 8,500 पैक्स के स्तर पर शिविरों का सफलतापूर्वक आयोजन किया जा चुका है। इस दौरान प्रमुख रूप से 5 प्रकार की गतिविधियां आयोजित कर उनमें आशानुरूप परिणाम प्राप्त

किये गए। उन्होंने बताया कि युवाओं एवं महिलाओं को अधिक से अधिक संख्या में सहकारिता से जोड़ना अभियान के अंतर्गत सबसे प्रमुख गतिविधि है। इस दिशा में बेहतरीन कार्य करते हुए अब तक 8.71 लाख से अधिक नए सदस्य बनाए जा चुके हैं। इसी प्रकार, पैक्सविहीन ग्राम पंचायतों में नवीन पैक्स गठन की कार्यवाही के तहत 1,688 ग्राम पंचायतों में सर्वे की कार्यवाही पूर्ण कर ली गई है। इनमें से 1,288 पैक्स हेतु जिला स्तरीय कमेटी की बैठक आयोजित हो चुकी है। जबकि, 1208 पैक्स के गठन हेतु प्रस्ताव विभाग को प्राप्त हो चुके हैं। सहकारिता मंत्री ने बताया कि अभियान के अंतर्गत अब तक भूमिविहीन या अपर्याप्त भूमि वाली 1,340 सहकारी समितियों में गोदाम निर्माण हेतु भूमि का चिन्हीकरण किया गया है तथा 1,213 सहकारी समितियों द्वारा भूमि आवंटन के लिए आवेदन किया गया है। इस दौरान पीएम किसान सम्मान निधि योजना के लम्बित आवेदनों में से 38 हजार 437 कृषकों की आधार सीडिंग व 27 हजार 209 कृषकों की ई-केवाईसी का कार्य पूर्ण किया गया है। उन्होंने बताया कि अभियान के दौरान अब तक 10.78 लाख से अधिक लोगों को प्रस्तावित नवीन सहकारी कानून के प्रमुख प्रावधानों की जानकारी दी जा चुकी है।

सहकारी आंदोलन को नई ऊंचाइयां देने की दिशा में अहम कड़ी

दक ने कहा कि सहकार सदस्यता अभियान राज्य में सहकारिता का नेटवर्क मजबूत करने तथा सहकारी आंदोलन को नई ऊंचाइयां देने की दिशा में अहम कड़ी साबित हो रहा है। बड़ी संख्या में नवीन पैक्स के गठन तथा युवाओं एवं महिलाओं के सहकारी समितियों से जुड़ने से राज्य में जमीनी स्तर पर पर सहकारिता का नेटवर्क और अधिक मजबूत हो रहा है, जिससे अधिक लोगों तक सुचारू रूप से जनकल्याणकारी योजनाओं की पहुंच सुनिश्चित होगी। साथ ही, भूमिविहीन समितियों को भूमि आवंटन हो जाने से इन समितियों में गोदाम के निर्माण की राह प्रशस्त होगी, जिससे राज्य की भण्डारण क्षमता में आशातीत वृद्धि होगी।

अब ट्रेनों में मिलेंगे प्रिंटेड कंबल कवर

जयपुर-अहमदाबाद एक्सप्रेस में सुविधा शुरू, रेल मंत्री ने किया 65 स्टेशनों पर विभिन्न सुविधाओं का लोकार्पण

कंबल पर जयपुर की डिजाइन सांगानेरी प्रिंट

जयपुर. कासं

रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव ने राजधानी के खातीपुरा रेलवे स्टेशन से ट्रेन में प्रिंटेड कंबल कवर देने की शुरूआत की। जयपुर असारवा (अहमदाबाद) ट्रेन के एसी श्रेणी के यात्रियों के साथ कंबल कवर की सुविधा शुरू की गई। साथ ही 65 रेलवे स्टेशनों पर यात्री सुविधाओं का भी लोकार्पण किया गया। रेल मंत्री ने कहा कि प्रिंटेड कंबल कर पर डिजाइन भी जयपुर की है। 50-60 सालों से ट्रेनों में कंबल ऐसे ही दिए जा रहे थे। कई बार ओढ़ने में संशय रहता था कि साफ होगा या नहीं, लेकिन अब कवर लगाकर कंबल ओढ़ सकेंगे। रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव ने बताया कि पायलट प्रोजेक्ट के तहत एक रेलगाड़ी से कंबल कवर की शुरूआत की गई है। इसके सफल होने पर सभी गाड़ियों में इसे शुरू किया जाएगा। कंबल पर जयपुर की डिजाइन सांगानेरी प्रिंट है। कंबल सिलेक्ट करने में इसकी लाइफ और आसान वॉशिंग का ध्यान रखा गया। उन्होंने बताया कि छोटे-छोटे स्टेशनों पर इंफॉर्मेशन के लिए साइन बोर्ड, फुल लेंथ प्लेटफार्म बनाने समेत विभिन्न सुविधाओं का 65 स्टेशनों पर लोकार्पण किया गया। जयपुर, गांधीनगर, खातीपुरा समेत सभी रेलवे स्टेशनों पर अच्छा डेवलपमेंट हो रहा है। नए स्टेशन बनाना, नई पटरिया बिछाना, विद्युतीकरण करने के साथ ही यात्री सुविधाओं का विशेष ध्यान रखा जा रहा है। उत्तर पश्चिम रेलवे के अजमेर मण्डल के 3 स्टेशन (करजोड़ा, गकरेड़ा और पीपलाज स्टेशन), बीकानेर मण्डल के 14 स्टेशन (नाथवाणा, बिग्गा, बनीसर, नोहर, केसरीसिंहपुर, गजसिंहपुर, सुधराना, सरूपसर, भगवानसर, पृथ्वीराजपुर, संगत, जामसर, जाखोद खेडा और सुचान कोटली स्टेशन), जयपुर मण्डल के 2 स्टेशन (भेसलाना और चाकसू स्टेशन) एवं जोधपुर मण्डल के 22 स्टेशन (ढुंढाडा, गुढ़ा, गोविन्दी मारवाड़, भीमरलाई, पारलू, कवास, जसाई, बनिया सांडा धोरा, मारवाड़ छापरी, बदवासी, श्री बालाजी, सालावास, हरलाया, शैतानसिंह नगर, मारवाड़ बीटड़ी, तालछापर, गागरिया, पीपाड़ सिटी, रामसर, बड़ी खाटू, छोटी खाटू, उदरामसर स्टेशन) पर नए प्लेटफॉर्म, प्लेटफॉर्म उन्नयन और विस्तार के कार्य किए गए हैं।

जेईसीसी प्रदर्शनी में तकनीकी सत्रों की धूम जारी

नवीन आपराधिक कानून और एआईः पुलिस प्रदर्शनी में ज्ञान मंथन जारी

एआई चुनौतियाँ, फोरेंसिक साक्ष्य और जेल सुधारों पर पुलिस अधिकारियों, प्रशिक्षुओं व विशेषज्ञों का विशेष सत्र

जयपुर. का.स

नवीन आपराधिक कानूनों के अमल में आने के बाद पुलिस की तैयारी भी बदल रही है। नवीन आपराधिक कानूनों के प्रभावी क्रियान्वयन और लोक जागरूकता के लिए आयोजित की जा रही पुलिस प्रदर्शनी के अंतर्गत पुलिस अधिकारियों और विभिन्न कानूनी हितधारकों के लिए ज्ञानवर्धक सत्रों की एक श्रृंखला चल रही है। इन विशेष सत्रों में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस से लेकर फॉरेंसिक साक्ष्य, कानून प्रवर्तन की आधुनिक चुनौतियों पर देश के शीर्ष विशेषज्ञों द्वारा गहन चर्चा की जा रही है। जिसका उद्देश्य पुलिस बल को नए कानूनी और तकनीकी युग के लिए पूरी तरह से तैयार करना है। इन तकनीकी सत्रों की मॉनिटरिंग खुद एडीजी और आरपीए निदेशक श्री एस. सेंगाथिर कर रहे हैं।

पुलिसिंग में एआई की चुनौतियों पर हुआ मंथन

तकनीकी सत्रों की शुरूआत नवीन तकनीकों और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) विषय पर आयोजित सत्र से हुई। इंडिपेंडेंट रिसर्चर क्षितिज वर्मा ने एआई की वर्तमान स्थिति और पुलिसिंग में इसके अनुप्रयोगों पर जानकारी दी। सत्र में अतिरिक्त महानिदेशक पुलिस एटीएस एवं एसओजी वी. के. सिंह ने पुलिस कार्यप्रणाली में एआई के उपयोग तथा नवीन कानूनों के आलोक में आने वाली चुनौतियों का सामना करने पर अपने विचार रखे। इस महत्वपूर्ण इंटरेक्शन में निदेशक, राजस्थान पुलिस अकादमी एस. सेंगथिर, आईजी एससीआरबी अजय पाल लाम्बा, निदेशक इंटेलिजेंस प्रशिक्षण अकादमी प्रदीप मोहन शर्मा और उपमहानिरीक्षक पुलिस एसओजी परिस देशमुख सहित लगभग 160 पुलिस अधिकारी उपस्थित रहे।

फोरेंसिक पर हुआ संवाद

अगली कड़ी में नवीन आपराधिक कानून तथा एफएसएल की भूमिका पर एक पैनल डिस्कशन आयोजित किया गया। इस सत्र में प्रशिक्षु आरपीएस अधिकारियों तथा नेशनल फोरेंसिक साइंस यूनिवर्सिटी के विद्यार्थियों ने भाग लिया। पैनल में डायरेक्टर एफएसएल, जयपुर अजय शर्मा, सेवानिवृत्त डायरेक्टर एफएसएल एस. एस. डागा और कैंपस डायरेक्टर एनएफएसयू राखी अग्रवाल शामिल थे। विशेषज्ञों ने एफएसएल की बदलती भूमिका पर प्रकाश डाला और 120 प्रतिभागियों के प्रश्नों का उत्तर देते हुए उनके साथ गहन संवाद किया।

जेल सुधार और कानूनी प्रावधानों पर चर्चा

बीकानेर रेंज के पुलिस अधिकारियों तथा जेल विभाग के अधिकारियों का एक विशेष पैनल डिस्कशन आयोजित हुआ। इसमें महानिरीक्षक जेल, जयपुर विक्रम सिंह ने नवीन कानूनों तथा जेल सुधारों के लिए अपनाए जा रहे नवाचारों के संबंध में जानकारी दी। इस सत्र में 190 अधिकारियों ने भाग लिया।

नवीन कानूनों के क्रियान्वयन में आ रही चुनौतियों पर हुई गहन चर्चा

गुरुवार को उदयपुर रेंज के पुलिस अधिकारियों का सत्र आयोजित किया गया। इस सत्र में नवीन कानूनों के प्रमुख प्रावधानों, तकनीकी और फॉरेंसिक साक्ष्य विषय पर चर्चा हुई। सहायक निदेशक अभियोजन रमेश चौधरी और पुलिस निरीक्षक धीरज वर्मा ने विधिक प्रावधानों पर चर्चा की। इस सत्र में कांस्टेबल से लेकर अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक स्तर तक के 180 अधिकारियों ने भाग लिया, जहाँ उन्होंने नवीन कानूनों के क्रियान्वयन में आ रही चुनौतियों पर विचार-विमर्श किया। कार्यक्रमों की यह श्रृंखला पुलिस अधिकारियों को नवीन कानूनों और आधुनिक तकनीक के साथ तालमेल बिठाने में सहायता प्रदान कर रही है।

हमेशा से सर्वमंगल और विश्वकल्याण की कमान संभालता आया है विप्र समाज : प्रखर जी महाराज

बीकानेर. का.स

अंतरराष्ट्रीय धर्म, संस्कृति एवं समाजोत्थान के लिए समर्पित विप्र फाउंडेशन की ओर से धरणीधर रंगमंच, बीकानेर में भव्य विशेष सभा का आयोजन संपन्न हुआ। इस ऐतिहासिक आयोजन की अध्यक्षता प्रखर जी महाराज ने की। कार्यक्रम का शुभारंभ महाराज जी के सान्निध्य में मां गायत्री एवं भगवान परशुराम के समक्ष दीप प्रज्वलन से हुआ। वेदपाठी विद्यार्थियों द्वारा मंत्रोच्चारण से पूरा वातावरण मंगलमय बना। संचालन विप्र फाउंडेशन के राष्ट्रीय सचिव भंवर पुरोहित ने किया। कार्यक्रम संयोजक राजेश चुरा व रामकिशन आचार्य के साथ-साथ धनसुख सारस्वत (प्रदेश अध्यक्ष), दीपक हर्ष (प्रदेश संगठन महामंत्री), नारायण पारीक (प्रदेश सचिव), किशन जोशी (जिला अध्यक्ष), अमित व्यास (जिला संगठन महामंत्री), दिनेश ओझा (प्रदेश संगठन महामंत्री), रमेश उपाध्याय, नरेश पुरोहित, तन्नू काका, पंकज पीपलवा (जिला अध्यक्ष, युवा प्रकोष्ठ), प्रकाश उपाध्याय (युवा प्रकोष्ठ), विजय पाईवाल (युवा प्रकोष्ठ) आदि पदाधिकारियों ने स्वामी प्रखर जी का शॉल ओढ़ाकर एवं भगवान परशुराम की प्रतिमा भेंट कर भावपूर्ण स्वागत किया।

ब्राह्मण केवल व्यक्ति नहीं, बल्कि चरित्र है

महिला प्रकोष्ठ की ओर से चंद्रकला आचार्य (जिला अध्यक्ष, महिला प्रकोष्ठ), सीमा जोशी, शिला आचार्य एवं लक्ष्मी देवी पुरोहित ने स्वागत व संचालन में सक्रिय भागीदारी निभाई। महिलाओं की गरिमामयी उपस्थिति ने समारोह को और भी भव्य बना दिया। प्रखर जी महाराज ने अपने आशीर्वचन में कहा कि ब्राह्मण केवल व्यक्ति नहीं, बल्कि चरित्र है। यह चरित्र हर युग में विद्यमान रहता है। शास्त्र और शिक्षा ब्राह्मण के बिना अधूरी हैं। ब्राह्मणत्व केवल जाति नहीं, बल्कि आचरण और विचारों की धरोहर है, जो समाज को धर्म और संस्कृति की ओर अग्रसर करता है। विप्र समाज हमेशा सर्वमंगल और विश्वकल्याण की कमान संभालता आया है और भविष्य में भी यही उसका धर्म रहेगा। रामकिशन आचार्य ने अपने उद्बोधन में पुष्कर (गायत्री शक्तिपीठ, मणिवेदिका पीठ) में 8 मार्च से 19 अप्रैल 2026 तक आयोजित होने वाले 200 कुण्डीय गायत्री पुरश्चरण महायज्ञ में अधिकाधिक भागीदारी का आह्वान किया। और 5 दिसंबर को पुष्कर में होने वाले भूमि पूजन पर अधिकाधिक उपस्थिति दे। संत डॉ. सज्जन प्रसाद तिवारी ने कहा कि धर्म रक्षा प्रत्येक मानव का परम कर्तव्य है और सभी वर्गों की इसमें सतत भागीदारी आवश्यक है।

आचार्य धर्मसागर सभागार का हुआ लोकार्पण समारोह

समारोह में शहर विधायक, भाजपा जिलाध्यक्ष सहित कई जनप्रतिनिधियों ने की शिरकत

वात्सल्य वारिधी आचार्य वर्धमान सागर महाराज ने वर्चुअल माध्यम से दिए अपने आशीर्वचन

सीकर. शाबाश इंडिया

शहर के हृदय पटल फतेहपुरी गेट के समीप स्थित श्री पार्श्वनाथ भवन (दंग की नसियां) में बहुप्रतीक्षित 'धर्मसागर सभागार' के लोकार्पण समारोह के दो दिवसीय कार्यक्रम का भव्य समापन गुरुवार को हुआ। समाज के विवेक पाटोदी ने बताया कि इस अवसर पर शहर के जनप्रतिनिधियों के साथ साथ हजारों समाजजन भी साक्षी बने। इससे पूर्व बुधवार को प्रातः संगीतमय वास्तु विधान से हुआ। अष्टापद क्षेत्र से पधारे आचार्य धर्मचंद शास्त्री के सानिध्य में यह विधान संपन्न हुआ। अन्तराष्ट्रीय भजन गायक अजीत जैन, कुचामन की भजनों की प्रस्तुतियों ने श्रोताओं को झूमने पर मजबूर कर दिया। गुरुवार को लोकार्पण समारोह में प्रातः श्री पार्श्वनाथ भवन के नवीन निर्माण, आचार्य धर्मसागर सभागार के साथ साथ वर्धमान निलय एवं विभा निलय के कमरों का लोकार्पण हुआ। प्रबंध समिति मंत्री अजीत जयपुरिया एवं कोषाध्यक्ष अभिनव सेठी ने बताया कि आचार्य धर्मसागर सभागार का लोकार्पण विमलकुमार पन्नामणी बिनायक्या, आलोक-रचना, डॉ. विकास-डॉ. सोनिया, हार्दिक, जयेश एवं बिनायक्या परिवार द्वारा किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ मंगलाचरण से हुआ, जिसे वर्धमान विद्या विहार की बालिकाओं द्वारा प्रस्तुत किया गया। मंच संचालन प्रबोध पहाड़िया ने किया। सोशल मीडिया प्रसारण वीरध्वनि डिजिटल द्वारा किया गया। आचार्य धर्मसागर सभागार के बारे में जानकारी देते हुए प्रबंध समिति मंत्री अजीत जयपुरिया एवं कोषाध्यक्ष अभिनव सेठी ने बताया कि प्रथमाचार्य श्री शांतिसागर महाराज की परम्परा के तृतीय पट्टाचार्य धर्म शिरोमणि आचार्य श्री धर्मसागर महाराज के नाम से सुसज्जित धर्मसागर सभागार के निर्माण को पूर्ण होने में साढ़े तीन वर्ष लगे। प्रबंध समिति मंत्री अजीत जयपुरिया ने बताया कि इस सभागार के निर्माण के प्रथम स्तंभ स्व. विनोद सेठी है जिनकी सोच और प्रेरणा से ही इस निर्माण का प्रारंभ हो सका और वर्तमान प्रबंध समिति ने उनकी सोच को अपनी मेहनत से पूर्ण कर दिखाया। प्रबंध समिति के सुमति प्रकाश मोदी व आशीष जयपुरिया ने बताया कि दंग की नशियां स्थित मंदिर जी लगभग 150 वर्ष प्राचीन है। नशियां श्री दिगम्बर जैन बीस पंथ आमनाय बड़ा मंदिर के अंतर्गत है, बावड़ी गेट स्थित बड़ा मंदिर लगभग 350 वर्ष प्राचीन है।

अत्याधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित है नवीन सभागार: समाज के अनुभव सेठी ने बताया आचार्य धर्मसागर महाराज की यादों को संजोए इस भव्य सभागार के निर्माण की प्रेरणा वात्सल्य वारिधी आचार्य वर्धमान सागर महाराज से मिली। दंग की नशियां में निर्मित इस

खूबसूरत सभागार में हजारों लोगों के बैठने की व्यवस्था है। यह भवन पूर्णतः बहुउद्देशीय है और इसमें धार्मिक, सांस्कृतिक, वैवाहिक तथा अन्य सामाजिक कार्यक्रमों का सुचारू रूप से आयोजन किया जा सकेगा। शहर के मध्य में स्थित यह सुंदर परिसर शीघ्र ही समस्त सीकरवासियों के लिए उपयोगी एवं गौरव का केंद्र बनेगा। सभागार के साथ ही वर्धमान निलय एवं विभा निलय के रूप में 44 वातानुकूलित अटैच कमरों का निर्माण भी किया गया है।

जनप्रतिनिधियों ने की शिरकत

समाज के विवेक पाटोदी ने बताया कि आचार्य धर्मसागर सभागार के इस भव्य लोकार्पण समारोह में विशिष्ट अतिथियों के रूप में शहर विधायक ' राजेंद्र पारीक, पूर्व विधायक रतनलाल जलधारी , भाजपा जिलाध्यक्ष मनोज बाटड़, पूर्व जिलाध्यक्ष कमल सिखवाल , नगर परिषद सभापति जीवन खां , संघ चालक चितरंजन सिंह राठौड़,पूर्व जिलाध्यक्ष पवन मोदी ,सुशील माटोलिया, विश्व हिंदू परिषद जिलाध्यक्ष मनोज शर्मा, मंत्री शिव प्रसाद , दिनेश बियानी, संजय शर्मा, पवन सोढानी सहित अन्य जनप्रतिनिधियों ने अपनी सहभागिता निभाई।

वात्सल्य वारिधी आचार्य वर्धमान सागर महाराज ने वर्चुअल माध्यम से दिए आशीर्वचन: मीडिया प्रभारी विवेक पाटोदी ने बताया कि वात्सल्य वारिधी आचार्य वर्धमान सागर महाराज ने टोंक से वर्चुअल माध्यम से लाइव टेलीकास्ट द्वारा लोकार्पण समारोह के शुभ अवसर पर अपने आशीर्वचन कार्यक्रम में उपस्थित जनसमूह को दिया। उन्होंने आचार्य श्री धर्मसागर जी के जीवन पर प्रकाश डालते हुए उनके संयम रूपी जीवन के बारे में बताया। पूज्य आचार्य वर्धमान सागर महाराज ने बताया कि यथा नाम तथा गुण के धारक आचार्य महाराज वास्तव में धर्म के सागर ही थे। जिस प्रकार सागर अनेकों नदियों के प्रविष्ठ होने पर भी क्षोभ को प्राप्त नहीं होता तथा नदियां ही सागर में मिलकर सागर का रूप धारण कर लेती हैं। उसी प्रकार आप के धर्मोपदेश से हजारों व्यक्ति अपना जीवन परिवर्तन कर धर्म के सागर में डुबकी लगा चुके हैं। आपने अनेकानेक भव्य जीवों को मोक्ष के मार्ग पर लगाया हैं। आप वास्तव में साक्षात सागर ही थे। सागर रत्नों का भंडार होता है, उसी प्रकार आप में भी अनेकों गुण रत्न थे।आपने नैतिकता, सदाचार, तप, त्याग, सत्य, अहिंसा, अपरिग्रह, ब्रह्मचर्य, अचौर्य आदि के बारे में उपदेश देकर जन जीवन के उत्थान का महत्वपूर्ण कार्य किया। आपके उपदेश सदैव बहुजनहिताय, बहुजन सुखाय रहें आपके गुण अनिर्वचनीय है, राजा हो या रंक, धनी हो या निर्धन, बालक हो या वृद्ध, निंदक हो या प्रशंसक सभी के प्रति समान स्नेह का भाव रखकर आप सबकों अपना बना लेते थे। आप वात्सल्य व करूणा की प्रतिमूर्ति थे। आपके वचनों में माधुर्य के साथ-साथ स्पष्टवादिता भी रही। आपकी मधुर वाणी तथा सौम्य स्वभाव ने जन-जन के हृदय में आपके प्रति आदर का स्थान बना लिया था।

गणिनी आर्यिका विभाश्री माताजी ने प्रबंध समिति सहित समस्त जैन समाज को कोटा से वर्चुअल माध्यम से दिया आशीर्वाद

प्रबंध समिति के संतोष बिनायक्या एवं समाज के पंकज दुधवा ने बताया कि कोटा से वर्चुअल माध्यम से पूज्य आर्यिका विभाश्री माताजी ने भी प्रबंध समिति सहित सीकर जैन समाज को लोकार्पण समारोह पर अपना आशीर्वाद दिया। जनप्रतिनिधियों ने भी आचार्य धर्मसागर जी एवं जैन समाज से जुड़े अपने अनुभव सांझा किए।

आचार्य धर्मसागर महाराज-जीवन परिचय

क्षत्रिय वीरों की श्रेष्ठ भूमि राजस्थान के बूंदी जिले में गंभीरा ग्राम में श्रेष्ठी बख्तावरमल के यहाँ उमरावबाई की कुक्षि से पौष शु. पूर्णिमा वि.सं. 1970 सन-1914 को एक शिशु ने जन्म लिया, जन्म नाम रखा गया चिरंजीलाल। युवावस्था में आचार्यकल्प श्री चन्द्रसागर महाराज से आपने सप्तम प्रतिमा रूप ब्रह्मचर्यव्रत धारण किया तथा चैत्र शु. सप्तमी वि.सं. 2001 को उन्हीं से क्षुल्लक दीक्षा धारणकर भद्रसागर बने। पुनः आचार्यश्री वीरसागर महाराज से ऐलक दीक्षा लेकर शीघ्र ही वि.सं. 2003 की कार्तिक शु. 14 को मुनि दीक्षा प्राप्त कर मुनिश्री धर्मसागर जी के नाम से प्रसिद्ध हुए। गुरुदेव की समाधि के पश्चात श्री धर्मसागर महाराज ने एक मुनि पद्मसागर जी को साथ लेकर धर्मप्रभावना हेतु संघ से पृथव्वै विहार किया। वि.सं. 2025 (सन-1969) में बिजौलिया चातुर्मास के अनंतर श्री महावीरजी शांतिवीर नगर में होने वाले पंचकल्याणक महोत्सव में आप पधारे थे। वहीं अचानक फाल्गुन कृ. अमावस्या को आचार्यश्री शिवसागर महाराज की समाधि हो गई। अतः आपको फाल्गुन शुक्ला अष्टमी, सन-1969 में इस परम्परा के तृतीय पट्टाचार्य के रूप में चतुर्विध संघ ने स्वीकार किया। सन-1974 में दिल्ली के अंदर आयोजित भगवान महावीर के ऐतिहासिक 2500वें निर्वाण महोत्सव में अपने विशाल चतुर्विध संघ सहित आपने गरिमामय सान्निध्य प्रदान किया एवं पश्चिमी उत्तरप्रदेश के बड़ौत-सहारनपुर-मुजफ्फरनगर-सरधना आदि नगरों में विहार करके अपनी सिंहवृत्ति से सम्पूर्ण जनता को प्रभावित किया, जो अविस्मरणीय है। चालीस वर्ष की दीर्घ संयमसाधना के अनन्तर ईसवी सन-1987 वैशाख कृष्णा 9 वि.सं. 2004 की 22 अप्रैल को सीकर (राज.) में अत्यंत शांत भाव से आपने समाधिमरण को प्राप्त कर जीवन के अंतिम लक्ष्य को सिद्ध किया।

परिदृश्य

अनुशासन भूलता बचपन और अति-आत्मविश्वास का संकट

लोकप्रिय टीवी शो 'कौन बनेगा करोड़पति' का हालिया एपिसोड एक गंभीर बहस को जन्म दे गया है। इसमें एक दस वर्षीय प्रतिभागी का अति-आत्मविश्वास पहले तो आकर्षक लगा, लेकिन जैसे-जैसे शो आगे बढ़ा, उसके जवाब देने के तरीके ने सबको हैरान कर दिया। बच्चे ने न केवल महानायक अमिताभ बच्चन को खेल के नियम समझाने की कोशिश की, बल्कि कुछ देर के लिए अपनी बातों से उन्हें निशब्द भी कर दिया। हालांकि वह जल्द ही खेल से बाहर हो गया, लेकिन अपने पीछे कई अनसुलझे सवाल छोड़ गया। यह घटना महज एक बच्चे के व्यवहार तक सीमित नहीं है, बल्कि यह हमारी नई पीढ़ी की बदलती मानसिकता और परवरिश पर एक महत्वपूर्ण टिप्पणी है। यह सोचना आवश्यक है कि आखिर बच्चे ने ऐसा व्यवहार क्यों किया? आज की भागदौड़ भरी जिंदगी में अभिभावक बच्चों को कितना समय दे पाते हैं? इस व्यवहार का एक बड़ा कारण बच्चे का उस पीढ़ी से होना है, जिसे 'जेन अल्फा' कहा जाता है। यह 2010 के बाद जन्मी वह पीढ़ी है, जो पूरी तरह से 21वीं सदी की देन है। जन्म से ही स्मार्टफोन और टैबलेट के बीच पले-बढ़े ये बच्चे डिजिटल दुनिया के मूल निवासी हैं। उनके लिए सब कुछ तत्काल होता है—सूचना, मनोरंजन और यहाँ तक कि प्रशंसा भी। इसी तात्कालिकता ने उनके स्वभाव में धैर्य की कमी और हाजिर-जवाबी भर दी है। मनोवैज्ञानिक इसे विकासात्मक असंतुलन से जोड़कर देखते हैं। इन बच्चों का मस्तिष्क सूचनाओं को तो बहुत तेजी से ग्रहण करता है, लेकिन उनके मस्तिष्क का वह हिस्सा (फ्रंटल लोब), जो निर्णय लेने, धैर्य और भावनात्मक नियंत्रण के लिए जिम्मेदार है, धीमी गति से विकसित हो रहा है। यही असंतुलन व्यवहार में झलकता है, जिसे विशेषज्ञ एडीएचडी (अटेंशन डेफिसिट हाइपरएक्टिविटी डिसऑर्डर) या ओडीडी (ऑप्जिशनल डिफिएंट डिसऑर्डर) जैसे व्यवहार संबंधी विकारों के लक्षणों से जोड़ते हैं।

संपादकीय

सियासत, मुद्दे और जनता की अग्निपरीक्षा

बिहार की सियासी भूमि एक बार फिर चुनावी सरगर्मी से तप रही है। जैसे-जैसे विधानसभा चुनावों की तिथि निकट आ रही है, राज्य में राजनीतिक गतिविधियां अपने चरम पर पहुंच गई हैं। निर्वाचन आयोग ने 6 और 11 नवंबर को दो चरणों में मतदान की घोषणा कर दी है, जिसके परिणाम 14 नवंबर को आएँगे। एक ओर सत्ता में विराजमान राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग), जिसमें भाजपा और जदयू 101-101 स्थानों के

बराबर के हिस्सेदार हैं, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के मुख और ''दोहरे इंजन'' वाली सरकार के बल पर वापसी का दावा कर रहा है। वहीं दूसरी ओर, राष्ट्रीय जनता दल (राजद) के नेतृत्व वाला महागठबंधन आंतरिक स्थान-बँटवारे की चुनौतियों से जूझते हुए भी परिवर्तन के लिए ताल ठोक रहा है। इस चुनावी महासमर में प्रशांत किशोर की 'जन सुराज' और असदुद्दीन ओवैसी का नया गठबंधन भी पारंपरिक समीकरणों को चुनौती देने के लिए सज्ज है। इस चुनाव में जहाँ राजग ने अपना स्थान-बँटवारा सुलझा लिया है, वहीं महागठबंधन में राजद और कांग्रेस के बीच स्थानों को लेकर खींचतान जारी है। यह आंतरिक कलह विपक्ष की एकजुटता पर प्रश्नचिह्न लगाती है। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार, जो लगभग दो दशकों से बिहार की राजनीति के केंद्र में हैं, अपने शासन की विरासत के साथ मैदान में हैं, किंतु उनकी राजनीतिक पकड़ पहले जैसी सुदृढ़ नहीं दिख रही। वहीं, उपमुख्यमंत्री तेजस्वी यादव ने बेरोजगारी को अपना मुख्य चुनावी शस्त्र बनाया है और वे निरंतर युवाओं को आकर्षित करने के लिए 10 लाख नौकरियों के अपने पुराने वचन को दोहरा रहे हैं। भाजपा अपने केंद्रीय नेतृत्व और उपमुख्यमंत्री सम्राट चौधरी तथा विजय कुमार सिन्हा जैसे स्थानीय चेहरों के साथ एक आक्रामक रणनीति अपना रही है, जिसका ध्येय अपने बल पर मजबूत होकर उभरना है। धरातलीय मुद्दे बनाम जातीय समीकरणः बिहार में चुनाव केवल राजनीतिक दलों की प्रतिस्पर्धा नहीं, अपितु जनता की अपेक्षाओं की परीक्षा भी है। आज भी राज्य के समक्ष सबसे बड़ी चुनौतियाँ बेरोजगारी, उत्तम शिक्षा व स्वास्थ्य सेवाओं का अभाव, और वृहत स्तर पर होने वाला पलायन हैं। शहरी युवाओं में बेरोजगारी की गंभीर दर और प्रति वर्ष बाढ़ से होने वाली तबाही जैसे विषय जनता के लिए सर्वोपरि हैं। तथापि, धरातलीय वास्तविकता यह है कि राजनीतिक दलों का संपूर्ण ध्यान जातीय समीकरणों को साधने पर केंद्रित है। जातिगत गणित का महत्वः बिहार की राजनीति में जातीय गणित सदा ही निर्णायक रहा है। इस बार भी यादव, कुशवाहा, दलित, महादलित और अत्यंत पिछड़ा वर्ग के मत समूह को लामबंद करने के लिए हर दल अपनी बिसात बिछा रहा है। राजद जहाँ अपने परंपरागत मुस्लिम-यादव समीकरण पर आश्रित है, वहीं राजग ने अपनी उम्मीदवार सूचियों में अन्य पिछड़ा वर्ग, अत्यंत पिछड़ा वर्ग और सवर्णों के मध्य एक सूक्ष्म संतुलन बनाने की चेष्टा की है।

-राकेश जैन गोदिका

परिदृश्य

अंधेरों से कब तक जंग लड़ेंगे गांव?

अनिता

बीकानेर के लूणकरणसर ब्लॉक के गाँवों में शाम होते ही सन्नाटा पसर जाता है। यह सिर्फ दिन ढलने के कारण नहीं, बल्कि इस अनिश्चितता के कारण है कि बिजली कब चली जाएगी। अचानक बुझते बल्ब और बंद होते पंखे यहाँ के लोगों की दिनचर्या का हिस्सा बन चुके हैं। यह अंधेरा सिर्फ रात का नहीं, बल्कि जीवन की हर दिशा में फैला हुआ है, जिसका असर बच्चों की पढ़ाई, महिलाओं के काम, किसानों की मेहनत और लोगों की सेहत पर साफ दिखता है। लूणकरणसर के ग्रामीणों के लिए बिजली एक अधिकार नहीं, बल्कि एक लंबा इंतजार बन गई है—एक ऐसी रोशनी, जिसका आना-जाना उनकी सांसों की लय तय करता है। बिजली कटौती की सबसे गहरी मार महिलाओं और किशोरियों पर पड़ती है। जब रात में बिजली चली जाती है, तो वे रसोई में अंधेरे से जूझते हुए खाना बनाने, मोबाइल की रोशनी में पानी भरने और बच्चों को चुप कराने का संघर्ष करती हैं। लूणकरणसर की झुलसा देने वाली गर्मी में बंद पंखों के बीच बच्चों का रोना और बुजुर्गों की बेचैनी घर की घुटन को और बढ़ा देती है। किशोरियाँ, जो शाम को पढ़ना चाहती हैं, उन्हें टॉर्च या मोमबत्ती की टिमटिमाती लौ में आंखों पर जोर डालते हुए किताबों पर झुकना पड़ता है। कई बार अंधेरे के कारण उनका घर से बाहर निकलना भी असुरक्षित हो जाता है, जिससे उनकी आजादी और सिमट जाती है। इस कटौती का दूसरा बड़ा झटका किसानों को लगता है। खेतों में सिंचाई करने वाली मोटरें अक्सर बिजली के अभाव में थम जाती हैं। कई किसान रात के अंधेरे में खेतों पर सिर्फ इसलिए जागते हैं कि शायद बिजली आ जाए। उनका कहना है कि सही समय पर पानी न मिलने से फसलें सूख जाती हैं, जिससे लागत और चिंता दोनों बढ़ती हैं। सौर पंप कुछ राहत देते हैं, लेकिन हर किसान इनका खर्च नहीं उठा सकता। लूणकरणसर के स्वास्थ्य केंद्रों की स्थिति भी गंभीर है। कई बार टीकों और दवाओं को ठंडा रखने वाले फ्रिज बिजली न होने से बंद हो जाते हैं। रात में मरीजों के इलाज के दौरान स्वास्थ्यकर्मियों को टॉर्च का सहारा लेना पड़ता है। यह स्थिति उस असमानता को उजागर करती है, जहाँ बुनियादी सुविधा के अभाव में ग्रामीणों का स्वास्थ्य और जीवन दाँव पर लगा है। राजस्थान के ग्रामीण क्षेत्रों की तस्वीर भी चिंताजनक है। 2024 के एक अध्ययन के अनुसार, राज्य के लगभग 30% ग्रामीण घरों को प्रतिदिन 12 घंटे से भी कम बिजली मिलती है। बिजली की गुणवत्ता भी एक बड़ी समस्या है, जहाँ वोल्टेज के उतार-चढ़ाव से उपकरण खराब हो जाते हैं। सरकार के प्रयासों से कनेक्शन तो लगभग हर गाँव पहुँच गए हैं, लेकिन निरंतर आपूर्ति अब भी एक बड़ी चुनौती है। इस समस्या का असर लोगों के मानसिक स्वास्थ्य पर भी पड़ रहा है। किशोरियाँ बताती हैं कि अंधेरे में पढ़ना आँखों और मन दोनों को थका देता है। वहीं, महिलाएँ कहती हैं कि अंधेरे में घर संभालने और सुरक्षा की चिंता उन्हें दोहरी थकान देती है। जब बिजली नहीं होती, तो वे बाहर शौच के लिए जाने से भी डरती हैं। यह अंधेरा सिर्फ सांप-बिच्छू का डर नहीं, बल्कि असुरक्षा की भावना भी लाता है। फिर भी, इन अंधेरों के बीच उम्मीद की लौ जल रही है। कई परिवार अब सोलर लैंप और इन्वर्टर का उपयोग कर रहे हैं। कुछ गाँवों में सामुदायिक प्रयासों से स्कूलों में सौर पैनल लगाए गए हैं। पीएम कुसुम जैसी सरकारी योजनाएँ भी किसानों के लिए एक नई राह खोल रही हैं। लूणकरणसर के लोग जानते हैं कि हर रात के बाद सुबह होती है। शायद एक दिन यह सुबह स्थायी रोशनी लेकर आएगी।

रसना इन्द्री पर विजय उसे मिलती है जो खाना सामने रखा है फिर भी नहीं खा रहा है : मुनि पुगंव श्री सुधा सागर जी महाराज

पंच कल्याणक महोत्सव के माता-पिता का कल होगा चयन: विजय धुर्रा

अशोकनगर. शाबाश इंडिया। रसना इन्द्री पर विजय उसको मिलती है जिसके सामने खाना रखा है और फिर भी नहीं खा रहा है सदभाव में अहभाव मुनि राज की सबसे बड़ी तपस्या करते हैं चौबीस घंटे साधु कैसे रहता है हमें पता नहीं है लेकिन चौंके में साधु को सब कुछ देना चाहते हैं साधु ले सकता है फिर भी साधु कहता है कि नहीं ये मैं नहीं लूंगा ये सबसे बड़ी बात है चक्रवर्ती दस लक्षण पर्व दस दिनों तक दस उपवास करता है उसे देख ने देवाता आते हैं चक्रवर्ती के आधे लड्डू में पूरा अशोक नगर नीपट जाये और नगर वासियों को पचे भी नहीं ऐसे वत्तीस लड्डू खाता है वह उपवास कर रहा है ऐसे उपवास करके बाले को उपवास करते हुए कैसा लग रहा है ये देखते हैं देवता। जिसके महल है फिर भी सुदर्शन सेठ जंगल में जाकर सामायिक कर रहे हैं जिनको मखमल के कम्बल की चुभन हो रहा है उक्त आश्य केउद्गार सुभाषगंज मैदान में विशाल धर्मसभा को संबोधित करते हुए राष्ट्रसंत मुनि पुगंव श्री सुधासागरजी महाराज ने व्यक्त किए।

पंच कल्याणक महा महोत्सव में इन्द्र इन्द्रणी वनने का सौभाग्य प्राप्त करें सभी समाज जन: विजय धुर्रा

इसके पहले जैन समाज के मंत्री विजय धुर्रा ने कहा कि परम पूज्य राष्ट्र संत मुनि पुगंव श्री सुधासागरजी महाराजससंघ व प्रतिष्ठाचार्य बालब्रह्मचारी प्रदीप भइया के निर्देशन में 9दिस से 15 दिसम्बर तक श्री मद् जिनेन्द्र पंच कल्याणक प्रतिष्ठा महा महोत्सव एवं विश्व शांति महायज्ञ व गजरथ महोत्सव भव्य आयोजन होगा इस शाही महामहोत्सव में हर घर से एक जोड़ी इन्द्र इन्द्रणी का वने इन्द्र इन्द्रणी को वस्त्र आभूषण हार मुकुट के साथ ही शुद्ध भोजन की व्यवस्था कमेटी द्वारा की जायेगी जिससे कि सभी भक्त निश्चित होकर भक्ति कर सके। कल धनतेरस को महा महोत्सव के प्रमुख पात्र में भगवान के माता-पिता का चयन किया जाएगा इस हेतु सभी को अपनी पात्रता सम्बंधी फर्म पंचायत कमेटी के कार्यालय से दिए जा रहे हैं जैन समाज अध्यक्ष राकेश कासंल महामंत्री राकेश अमरोद कोषाध्यक्ष सुनील अखाई उपाध्यक्ष अजित बरोदिया प्रदीप तारई राजेन्द्र अमन मंत्री शैलेन्द्र श्रागर मंत्री विजय धुर्रा मंत्री संजीव भारल्लिय मीडिया प्रभारी अरविंद कचनार आडिटर सजंय के टी थूवोनजी अध्यक्ष अशोक जैन टींगू मिल महामंत्री मनोज भैसरवास सहित अन्य प्रमुख जनो ने सभी से अनुरोध किया पहले अपना नाम देकर महोत्सव की शौभा बढ़ाये।

रोटी का सुख पाने गेहूं को पीसकर रोटी बनना होगा

उन्होंने कहा कि जैन दर्शन जीव को उस दशा में पहुंच देता है जहां स्वयं की पर्यायों की भी परवाह नहीं करते सिद्ध भगवान को सिद्ध पर्याय का आनंद नहीं आता उन्हें आकार नहीं दिखता उन्हें आकार झलकता तो जरूर है लेकिन वह अनुभव नहीं करते सिद्ध पर्याय हैं उनकी दशा इतनी ऊंची हो गई कि वहां पर्याय उत्पन्न होती रहती है और मिटती रहतीं हैं उन्हें अनुभव में नहीं है कि उन्होंने चार घातिया कर्म नष्ट कर दिये उन्होंने के अनुभव में नहीं आ रहा हैकि उन्होंने घातिया अघातिया कर्म को नष्ट कर दिया आज आप शक्ति की अपेक्षा शुद्ध हो गेहूं में रोटी की शक्ति है रोटी का सुख नहीं मिल सकता उसका स्वाद नहीं आ सकता यदि गेहूं को खा लिया तो पेट में दर्द हो जायेगा ऐसे ही शुद्ध निश्चय नय से आत्मा को जानें उसे अनुभव नहीं कर सकते। उन्होंने कहा कि निश्चय नय से कहा था कि तेरी आत्मा शुद्ध है बुद्ध है इतना कहते ही वह आत्मा का आनंद लेने बैठ गया वस यही चूकं हो गई गेहूं में रोटी का आनंद लेने बैठ गया यही सबसे बड़ी गलती हो गई जिंदगी का सबसे बड़ा दुर्भाग्य मानना कि तुम्हारे लिए पापा ने मारा मैं तुम्हारा राम दुश्मन से पिटकर आय्ओ में हाथ फेर दूंगा तुम ठीक हो जाएगा दुश्मन तुम्हारे लिए मार दे तो ठीक हो जाएगा लेकिन पिता ने मार दिया तो चोट ठीक नहीं होगी लेकिन एक बात ध्यान रखना पीटें तो रोकना नहीं जिंदगी में ऐसा कोई काम मत करना कि तुम्हारे लिए माता पिता को पीटना पड़े बस ये नियम पाल लिया तो जाओ तुम्हारा वैडा पार हो जायेगा।

संयम का उपकरण पिच्छी - कमंडल दिगम्बर जैन संतों की पहचान है : मुनिश्री विलोकसागर

26 अक्टूबर को होगा भव्य पिच्छिका परिवर्तन समारोह

मनोज जैन नायक. शाबाश इंडिया

मुरैना। जैन संत जैनेश्वरी दिगंबरी मुनि दीक्षा लेने पर सभी सांसारिक वस्तुओं, सुख सुविधाओं, वाहन, कूलर पंखा आदि का आजीवन त्याग कर देते हैं। वे केवल अपने पास मोर पंखों से बनी पिच्छिका, कमंडल और शास्त्र, जिनवाणी ही रखते हैं, और यहीं दिगम्बर जैन साधु साध्वियों की पहचान भी है । दिगम्बर साधु अपने पास केवल ज्ञान उपकरण के रूप में शास्त्र, शौच उपकरण के रूप में कमंडल व संयम उपकरण के रूप में पिच्छिका को ही रख सकते है। शास्त्र, साधुओं के ज्ञान को बढ़ाने में सहायक होते है, वहीं शौच आदि शरीर शुद्धि क्रिया के लिए कमंडल का उपयोग किया जाता है। दिगम्बर श्रमण (साधु) संयमी जीवन शैली व अहिंसा महाव्रत के निर्दोष पालन करने के लिए मयूर पिच्छिका को हमेशा अपने साथ रखते है। मयूर पिच्छिका का इतना महत्व है कि साधुजन आवश्यकता न होने पर बिना कमंडल व शास्त्र के तो अपनी अन्य क्रियाऐं कर सकते है, परंतु बिना पिच्छिका के सात कदम भी नही चल सकते है। दिगम्बर जैन श्रमण संयम उपकरण पिच्छिका का उपयोग अपनी दिनचर्या में प्रतिपल करते है। उठते बैठते, विश्राम करते, चलते फिरते, आहार आदि समस्त क्रियाओं में निरंतर परिमार्जन के लिए पिच्छिका सहायक होती है। अतः जब मयूर पंख की कोमलता कम हो जाती है अर्थात मयूर पंख का स्पर्श करने पर हल्के से कठोर लगने लगते है तब ही पिच्छिका को परिवर्तित किया जाता है।

अधिकांशतः पिच्छिका परिवर्तन वर्षायोग समापन पर ही किए जाते हैं। उक्त बात मुनिश्री विलोकसागरजी महाराज ने अपने भक्तों को संबोधित करते हुए कही। पिच्छिका परिवर्तन के संदर्भ में मुनिश्री विलोकसागरजी महाराज ने बताया कि दिगंबर जैन साधुओं का पिच्छिका परिवर्तन समारोह एक पवित्र धार्मिक अनुष्ठान है, जिसमें मुनिगण अपनी पुरानी पिच्छिका को बदलकर नई पिच्छिका ग्रहण करते हैं। यह समारोह संयम, त्याग और अहिंसा का प्रतीक है और इसे आत्मा की शुद्धि और आध्यात्मिक उन्नति का एक हिस्सा माना जाता है। यह आम तौर पर वर्षा ऋतु के बाद होता है, जब मुनि एक ही स्थान पर रुककर साधना करने के पश्चात पुनः पद बिहार शुरू करते हैं।पिच्छिका को संयम का उपकरण कहा जाता है । संयम और अहिंसा का प्रतीक पिच्छी संयम और करुणा का एक उपकरण है, जिसका उपयोग जैन साधु संत सूक्ष्म जीवों को नुकसान पहुँचाए बिना रास्ते और अपने आस-पास की वस्तुओं को साफ करने के लिए करते हैं। **क्या होती है पिच्छिका:** मोर पंखों से निर्मित पिच्छिका का उपयोग जैन संत अहिंसा धर्म के पालन के लिए करते हैं। मयूर पंख बहुत कोमल होते हैं, जो सूक्ष्य जीवों को नुकसान पहुँचाए बिना उन्हें हटाने अथवा दूर करने में मदद करते हैं। यह देखने में सुंदर और वजन में हल्के होते है, जिससे मुनिगण इसका उपयोग सहज और सरलता से कर लेते हैं। मोर पंखों से बनी पिच्छिका कोमल होती है, यही कारण है कि इससे किसी प्रकार के जीवों को नुकसान नहीं होता । यह पसीना और धूल को ग्रहण नहीं करता है, इसकी अहिंसा के पालन में एक महत्वपूर्ण भूमिका रहती है। **पिच्छिका परिवर्तन समारोह 26 अक्टूबर को होगा:** दिगम्बर जैनाचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज के परम प्रभावक शिष्य जैन संत युगल मुनिराज मुनिश्री विलोकसागरजी महाराज एवं मुनिश्री विबोधसागरजी महाराज का वर्षायोग विभिन्न धार्मिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक आयोजनों के साथ चल रहा है। रविवार 26 अक्टूबर को भव्य पिच्छिका परिवर्तन समारोह के पश्चात वर्षायोग का समापन होगा। पिच्छिका परिवर्तन समारोह के पावन अवसर पर रविवार 26 अक्टूबर को प्रातः 07 बजे श्री जिनेन्द्र प्रभु का अभिषेक, शांतिधारा एवं अष्टद्रव्य से पूजन किया जाएगा। प्रातः 07.30 बजे से श्री भक्तामर महामंडल विधान एवं युगल मुनिराजों के प्रवचन होंगे । दोपहर 01 बजे से पिच्छिका परिवर्तन समारोह होगा । आज के दिन ही वर्षायोग कलशों का वितरण भी किया जाएगा। **26/27 अक्टूबर को हो सकता है पद विहार:** चातुर्मास के चार माह पूर्ण होने पर युगल मुनिराज श्री सिद्ध परमेष्ठि की भक्तियां एवं स्तुति कर चातुर्मास निष्ठापन करेंगे ।26 अक्टूबर को पिच्छिका परिवर्तन के पश्चात शाम को अथवा 27 अक्टूबर को पूज्य युगल मुनिराजों का मंगल पद बिहार मुरैना से पोरसा के लिए हो सकता है । पोरसा में पूज्य युगल मुनिराजों के पावन सान्निध्य में आठ दिवसीय श्री सिद्धचक्र महामंडल विधान एवं विश्व शांति महायज्ञ 29 अक्टूबर से 06 नवंबर तक होगा।

एक बार के क्रोध से 24 घंटे की आयु का होता क्षयः गणिनी आर्यिका विज्ञाश्री माताजी

भोपाल. शाबाश इंडिया

जो आत्मा को कसे अर्थात दुःख दे , उसे कषाय कहते हैं और ये कोधादि चार कषाय हमारी आत्मा में कालिमा पैदा करती है। एक बार के क्रोध करने से 24 घंटे की आयु क्षीण होती है और 17 हजार श्वेत कोशिकाएँ रक्त रुप परिणत हो जाती है । यह बात गणिनी आर्यिका विज्ञाश्री माताजी ने श्री शांतिनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर दानिश कुंज भोपाल में उपस्थित जनसमूह के मध्य कही । आगे उन्होंने बताया कि - क्रोध में व्यक्ति अंधा - बहरा हो जाता है उसे यह समझ नहीं आता मैं क्या बोल रहा हूँ किससे बोल रहा हूँ। हम छोटी छोटी सी बातों पर क्रोध करने लगते हैं । पार्श्वनाथ भगवान ने तो कमठ की बडी बडी गलतियों को भी क्षमा का स्थान दिया तो हम भी अपने क्षमा गुण को प्रकट कर सकते हैं। हम प्रतिदिन मान करके मार्दव गुण को , मायाचारी करके आर्जव गुण और लोभ करके शौच गुण को नष्ट करते जा रहे हैं जो कि हमारे संसार को बढ़ाने में कारण है ।फिर भी इनके प्रति हमारा समर्पण है लेकिन जो देव शास्त्र गुरू आपको सही राह दिखाने वाले है उनसे आपकी दुरियां है। माताजी ने उपस्थित जनसमूह से कहो - क्रोध मान माया लोभ करने से कुछ नहीं मिलने वाला। आज परिवार क्यों टूटते जा रहे हैं इसी क्रोध के कारण ।मंदिर में भगवान के दर्शन से कर्म कटते हैं और हम सभी मंदिरों में आकर लडते हैं पाप कर्म जोड़ते हैं । मेरा आप सभी से कहना चाहे घर हो परिवार देश राष्ट्र या मंदिर एकता बनाकर क्षमा धारण करें जिससे एकता भी बनी रहे और आत्मा में भी कर्म परमाणुओं की निर्जरा हो।

प्रज्ञा से जाना गया धर्म ही मोक्ष का पथः युवाचार्य महेंद्र ऋषिजी

श्रीमद् उत्तराध्ययन सूत्र के 23वें,24वें अध्ययन की विवेचना पनवले में

पनवेल. शाबाश इंडिया

धर्म को समझने के लिए केवल श्रवण नहीं, बल्कि प्रज्ञा आवश्यक है। शब्दों का उच्चारण धर्म नहीं, उन शब्दों के पीछे छिपे भाव को जानना ही तत्वज्ञान है जो साधक धर्म को प्रज्ञा से समझता है, वही मोक्षमार्ग का सच्चा पथिक बनता है। यह उद्गार श्रमणसंघीय युवाचार्य महेंद्र ऋषिजी महाराज ने गुरुवार को कापड़ बाजार जैन स्थानक में श्रीमद् उत्तराध्ययन सूत्र के 23वें और 24वें अध्ययन की भावार्थ विवेचना के दौरान व्यक्त किए। युवाचार्यश्री ने कहा कि उत्तराध्ययन सूत्र में अनेक संवादों के माध्यम से जीवनझतत्व के गूढ़ रहस्य प्रकट हुए हैं। ऐसा ही एक अद्भुत संवाद केशी श्रमण और भगवान महावीर के प्रथम शिष्य गौतमस्वामी के बीच हुआ। दोनों ही ज्ञानी और त्यागी साधक थे। यह संवाद धर्म की प्रामाणिकता और विवेक का अनुपम उदाहरण है। जब केशी श्रमण ने पूछा कि पार्श्वनाथ भगवान ने चार व्रत और महावीर स्वामी ने पाँच महाव्रत क्यों बताए? तब गौतमस्वामी ने उत्तर दिया, ''पण्णा समीख धम्मं, तत्तं तत्त विनियमं'' अर्थात धर्म की समीक्षा प्रज्ञा से करो, तत्व को जानो और उसी के अनुरूप निर्णय करो। युवाचार्य प्रवर ने स्पष्ट किया कि प्रत्येक युग के साधकों की प्रवृत्ति भिन्न रही है। पूर्वकाल के साधक सरल थे किंतु धीमी गति से समझते थे; अंतिम काल के साधक जड़ और जटिल हैं, जबकि मध्यम काल के साधक सरल और प्रज्ञावान दोनों होते हैं। इसी कारण तीर्थंकरों के व्रतों में भेद आया, परंतु धर्म का सार एक ही है, आत्मशुद्धि और संयम। गौतमस्वामी ने कहा मैंने राग और द्वेष रूपी गांठों को तोड़ दिया है,अब मैं पाश रहित होकर मुक्त भाव से विचरण करता हूँ। युवाचार्यश्री ने बताया राग और द्वेष ही संसारझबंधन की जड़ हैं। इनकी अग्नि को शांत करने वाला जल श्रुत, चारित्र और तप है।

उन्होंने कहा परमात्मा ने इन्हें कषाय शमन के लिए जल बनाया था, किंतु आज मनुष्य इन्हीं से कषाय को भड़काने लगा है। गौतमस्वामी ने केशी श्रमण को धर्म का वास्तविक स्वरूप समझाया धर्म वही है जो रागझद्वेष की अग्नि को शांत कर आत्मा में शीतलता लाए। इस तत्व को समझकर केशी श्रमण ने गौतमस्वामी के समक्ष पाँच महाव्रत धर्म को स्वीकार किया। युवाचार्यश्री ने कहा यही सच्ची आराधना है जहाँ तत्व की समझ बने, वहाँ उसे जीवन में उतारने का पुरुषार्थ किया जाए। विवेचना के उत्तरार्ध में युवाचार्यश्री ने अष्ट प्रवचन माताओं की महत्ता बताई ये प्रवचन माताएँ केवल साधुझसाध्वियों के लिए नहीं, बल्कि हर गृहस्थ के जीवन-नियामक सिद्धांत हैं। इनमें पाँच समितियाँ ईर्या, भाषा, एषणा, आदान-निक्षेपण और उत्सर्ग समिति, तथा तीन गुप्तियाँ मन, वचन और काय की शामिल हैं। उन्होंने कहा समिति शुभ प्रवृत्ति का मार्ग दिखाती है, जबकि गुप्ति अशुभ प्रवृत्तियों से निवृत्ति का अनुशासन सिखाती है। जितनी समिति, उतना हल्का कर्मबंध,जितनी गुप्ति, उतना नियंत्रण। जीवन से जुड़ा ,उदाहरण देते हुए उन्होंने कहा आज वाहन चलाते समय सावधानी, संवाद में संयम, भोजन में विवेक और वस्तुओं के प्रयोग में मयार्दा-यही हमारे लिए ईर्या, भाषा,एषणा और आदानझनिक्षेपण समितियाँ हैं। साधक वही है जो चलने, बोलने, खाने, रखने और त्यागने- हर कर्म में सजग और मर्यादित हो। आखिर मे युवाचार्यश्री ने कहा पाँच समिति और तीन गुप्ति प्रवचन रूपी माताएँ हैं, जो साधक का पालन भी करती हैं और उसकी आत्मझसाधना की रक्षा भी। इनका पालन करने वाला साधक जन्मझमरण के चक्र से मुक्त हो जाता है। चातुर्मास समिति के अध्यक्ष राजेश बांठिया ओर मंत्री रणजीत सिंह काकरेचा ने जानकारी देते हुए बताया कि दीपावली एवं नये वर्ष गौतम प्रतिपदा के अवसर पर श्रमण संघीय युवाचार्य महेंद्र ऋषिजी महाराज 19 से 21 अक्टूबर तक तीन दिवसीय तेले तप मौन साधना करेंगे। बुधवार 22 अक्टूबर को प्रातः कालीन विशेष मंगलपाठ एवं आशीर्वचन प्रदान करेंगे।

प्रवक्ता सुनिल चपलोत

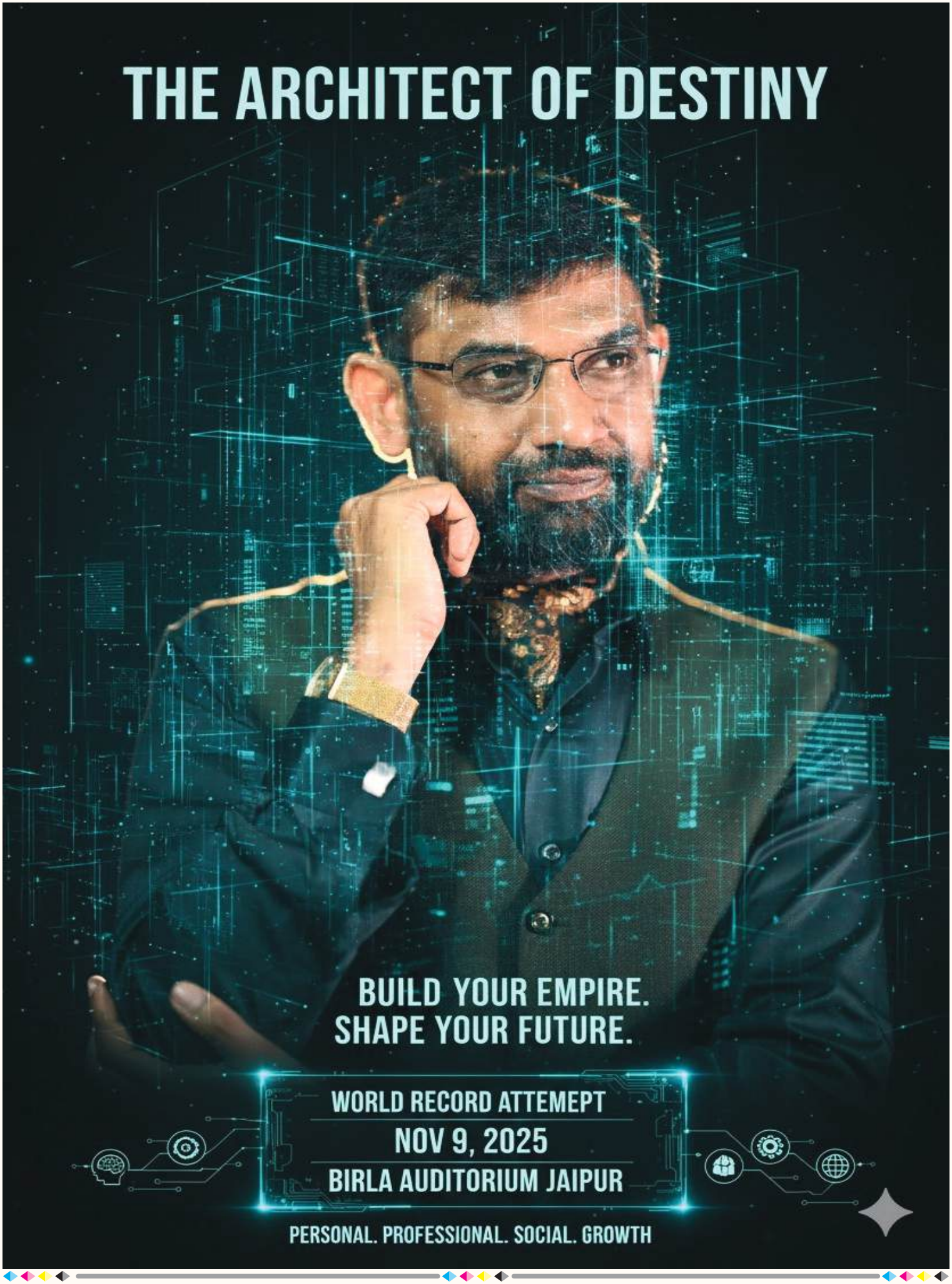
THE ARCHITECT OF DESTINY
BUILD YOUR EMPIRE.
SHAPE YOUR FUTURE.
WORLD RECORD ATTEMEPT
NOV 9, 2025
BIRLA AUDITORIUM JAIPUR
PERSONAL. PROFESSIONAL. SOCIAL. GROWTH

समय सब कुछ बदल देता है...

जरूरत सिर्फ सब्र की है...!

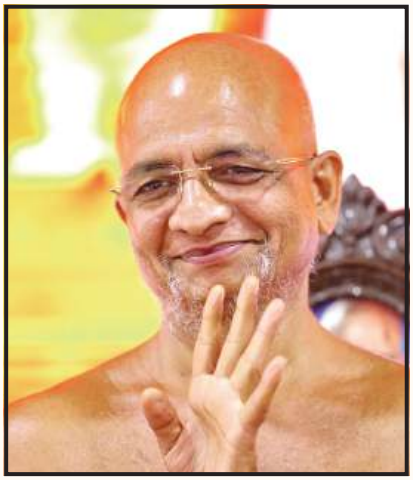

जीवन कैसे जीयें -- ये रामायण से सीखें। जीवन कैसे ना जीयें -- ये महाभारत से सीखें। जीवन कैसे सँवारे -- ये जैन दर्शन की गीता (तत्वार्थ सूत्र) से सीखें अन्तर्मना आचार्य श्री प्रसन्न सागरजी महाराज

तरुणसागरम तीर्थ, गाजियाबाद। अन्तर्मना आचार्य श्री प्रसन्न सागरजी महाराज एवं उपाध्याय पियूष सागरजी महाराज ससंघ तरुणसागरम तीर्थ पर वर्षायोग हेतु विराजमान हैं उनके सानिध्य में वहां विभिन्न धार्मिक कार्योंकम संपन्न हो रहें हैं उसी श्रृंखला में उपस्थित गुरु भक्तों को संबोधित करते हुए आचार्य श्री प्रसन्न सागरजी महाराज ने कहा कि समय सब कुछ बदल देता है..जरूरत सिर्फ सब्र की है..!जीवन कैसे जीयें -- ये रामायण से सीखें।जीवन कैसे ना जीयें -- ये महाभारत से सीखें।जीवन कैसे सँवारे -- ये जैन दर्शन की गीता से सीखें (तत्वार्थ सूत्र)। भारतीय परम्परा में सन्तान को कुल दीपक कहा जाता है क्योंकि वह कुल को प्रकाशित करता है।लेकिन जब कोई कुल दीपक दीक्षा ले लेता है, तो वह कुल दीपक नहीं फिर वह आकाश-दीप बन जाता है। और आकाश दीप एक का नहीं वह तो सबका अपना होता है क्योंकि वह सबको प्रकाशित करता है। आकाश-दीप केवल एक समाज का नहीं, अपितु समूचे राष्ट्र और विश्व का दीप है।इसलिए नई पीढ़ी को अच्छी शिक्षा के साथ, धार्मिक संस्कार एवं जीवन मूल्यों की शिक्षा का पाठ जरूर पढ़ायें। यदि संस्कारों का पाठ नहीं पढ़ाया, तो हम उनसे भविष्य की कोई भी उम्मीद ना रखें। अन्यथा जो ये पीढ़ी करेगी, ना हम देख पायेंगे ना तुम सुन पाओगे।इसलिए मैं कह रहा हूँ -- कि इस नई पीढ़ी को सुसंस्कार देकर, सुसंस्कृत बनायें। यदि संस्कार की जड़ें मजबूत रहेगी तो आधुनिकता की आँधी, नई पीढ़ी के इस बट वृक्ष को कभी धराशायी नहीं कर पायेगी। अन्यथा हम साँप को दूध पिला रहे...!

-नरेंद्र अजमेरा पियुष कासलीवाल औरंगाबाद

लक्ष्मी गिफ्ट पैक भेट करे तथा संवारे बचपन

जयपुर। जय श्रीकृष्णा कमलाबाई चैरिटेबल ट्रस्ट योजना संवारे बचपन के माध्यम से पिछले नौ वर्षों से बालिकाओं को शिक्षा में योगदान देती आई है। अब बालिकाओं की संख्या बढ़कर 41 हो गई है और इस वर्ष भी संस्था दिवाली पर इस योजना के अन्तर्गत इन निराश्रित,बिना माता पिता की, व जरुरतमंद बालिकाओं को खुशियां बांटने के लिए लक्ष्मी गिफ्ट पैक तैयार कर रही है बेटियों के लिए नये वस्त्र, मिठाइयां, दीपक, छोटे-छोटे पटाखे, लक्ष्मी जी का पाना व स्टेशनरी से ये गिफ्ट पैक तैयार किया जायेगा। इस लक्ष्मी गिफ्ट पैक की सेवा राशि मात्र 1100/- रखी गई है। जैसा कि माना जाता है, बेटियां लक्ष्मी माँ का ही रूप होती है, इन्हें इस त्यौहार पर खुशी मनाने का मौका आपकी सहायता से अवश्य ही मिल सकता है। दिवाली पर जो खुशी इस लक्ष्मी गिफ्ट पैक मिलने पर इन बेटियों के चेहरे पर आयेगी, वो अद्भुत होगी। आप भी अपने हृदय में सुकून महसूस करेंगे, कि आप की एक छोटी सी राशि, दिवाली जैसे बड़े त्यौहार पर इन बेटियों को खुशियां प्रदान करेगी। शुभ दीपावली...41 लक्ष्मी गिफ्ट पैक सहयोग राशि 41000/-10 लक्ष्मी गिफ्ट पैक सेवा राशि 11000/-प्रति लक्ष्मी गिफ्ट पैक सेवा राशि 1100/-संस्था से जुड़ने व सहयोग के लिए सम्पर्क करें: कमलाबाई चेरिटेबल ट्रस्टफोनः 7231-8888-00/11Paytm, Google Pay, Phone Pay No. 7231888800Ac: Kamlabai Charitable TrustBank : HDFC BankAc No.: 50100666102862 RTGS/NEFT: HDFC0007035पताः 22, अभिषेक विहार, किरण मैरिज गार्डन के पीछे लालरपुरा, गांधीपथ (पश्चिम), वैशाली नगर, जयपुर ई-मेलः kbctindia@gmail.comKamlabai Charitable Trust. Niwala -Ek koshish संवारे बचपन Kamlabai Charitable Trustवेबसाइटःwww.kbct.orgwww.niwala.org

आपके विचार

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक राकेश जैन गोदिका द्वारा प्रकाशित दैनिक-ईपेपर 'शाबाश इंडिया' आम पाठक और समाज में जागरूकता फैलाने में सेतू का काम कर रहा है। आप अपने क्षेत्र के समाचार, आलेख, विचार आदि ई-मेल कर सकते हैं या निम्न नंबरों पर वाट्सअप कर सकते हैं।

सम्पादकः राकेश जैन गोदिका
@ 94140 78380, 92140 78380

दैनिक ई-पेपर
शाबाश इंडिया
shabaasindia@gmail.com | weeklyshabaas@gmail.com

दिवाली से पूर्व स्वायत्त शासन विभाग करवाएगा सभी दमकल दलों का सर्वे

3 दिन में पूरी हो जांच प्रक्रिया

जयपुर. कासं। राज्य सरकार ने आमजन की सुरक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता पर रखते हुए दिवाली के अवसर पर स्वायत्त शासन विभाग ने प्रदेशभर में संचालित सभी दमकल दलों का व्यापक सर्वे करवाने के निर्देश जारी किए हैं। शासन सचिव रवि जैन ने इस संबंध में आयोजित बैठक में अधिकारियों को सख्त निर्देश दिए कि आगामी तीन दिनों के भीतर सभी नगरीय निकाय अपने-अपने क्षेत्र के दमकल दलों की स्थिति का संपूर्ण मूल्यांकन करें। उन्होंने कहा कि सर्वे के अंतर्गत दमकल वाहनों की तकनीकी स्थिति, मशीनों की कार्यक्षमता, मैनपावर की उपलब्धता, आपदा के दौरान प्रतिक्रिया समय, पानी की आपूर्ति व्यवस्था, तथा सुरक्षा उपकरणों की स्थिति का विशेष रूप से परीक्षण किया जाए। जैन ने स्पष्ट निर्देश दिए कि इस कार्य में किसी भी प्रकार की लापरवाही या विलंब को गंभीरता से लिया जाएगा। उन्होंने कहा कि त्यौहारों के दौरान नागरिक सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए फायर सर्विसेज की तत्परता अत्यंत आवश्यक है। उन्होंने संबंधित उच्च अधिकारियों को निर्देश दिए कि जहां भी कमी या तकनीकी समस्या पाई जाए, उसका तत्काल समाधान सुनिश्चित किया जाए।

पटाखों से सुरक्षा, जीव रक्षा, प्रदूषण बचाव पोस्टर विमोचन

कुचामन सिटी. शाबाश इंडिया। महावीर इन्टरनेशनल कुचामन परिवार द्वारा दीपावली पर पटाखों से सुरक्षा, जीव रक्षा प्रदूषण से बचाव लिए जागरूकता अभियान के अंतर्गत आज 16 अक्टूबर गुरुवार को 4 बजे जैन स्कुल पलटन गेट पर अध्यक्ष वीर रामावतार गोयल सचिव अजित पहाडिया के सानिध्य मे पोस्टर का विमोचन किया गया । वीर सुभाष पहाडिया ने बताया कि पर्यावरण संरक्षण का सदेंश देकर बताया कि दीपावली पर्व प्रकाश का पर्व है, इसे प्रदूषणमुक्त एवं सुरक्षित बनाना हम सबकी सामूहिक जिम्मेदारी है । पोस्टर विमोचन संस्था कोषाध्यक्ष वीर सुरेश गगंवाल, वीर नन्दकिशोर बिडसर, वीर अशोक अजमेरा, वीर सम्पत बगडीया, वीर तेजकुमारजी बड़जात्या, वीर विकास पाटनी ने सहयोग किया। वीर सुभाष पहाडिया जैन को महावीर इन्टरनेशनल संस्था के मिसरी प्रोजेक्ट जोन के संयोजक व वीर कैलाश पांड्या को जोन सचिव, वीरा सुनिता गंगवाल सहयोजन पद प्राप्त करने पर संस्था सदस्यों द्वारा तिलक माला साफा से स्वागत सम्मान कर बहुमान किया गया। **-वीर सुभाष पहाड़िया**

शाबाश इंडिया ई-पेपर

प्रस्तुत करते हैं

दीपावली विशेषांक

दीपावली के अवसर पर शाबाश इंडिया

सोमवार 20 अक्टूबर, 2025

को 'दीपावली विशेषांक' प्रकाशित करने जा रहा है। इसमें व्यापार-व्यवसाय, अर्थ जगत, राजनीति एवं सम-सामयिक विषयों पर विश्लेषणात्मक आलेख प्रकाशित किए

विज्ञापनदाताओं के लिए एक सुनहरा अवसर

उच्च स्तरीय ब्रांडिंग

राज्य के प्रमुख शहरों में प्रबुद्ध पाठक वर्ग होने से उच्च स्तरीय ब्रांडिंग का एक बेहतरीन विकल्प है।

टारगेटेड एडवरटाइजिंग

अधिकतम पाठक मध्यम, उच्च मध्यम एवं उच्च आय वर्ग के हैं, जो विज्ञापन के लिहाज से टारगेटेड कस्टमर होते हैं।

विश्वसनीयता

शाबाश इंडिया की निष्पक्ष व तथ्यपरक खबरों से बनी छवि इसके विज्ञापनदाता की विश्वसनीयता को भी बढ़ाती है।

दीपावली विशेषांक में विज्ञापन एवं आलेख प्रकाशित करवाने के लिए सम्पर्क करें:

राकेश गोदिका, प्रधान सम्पादक

मोबाइल: 9414078380, 9214078380 EMAIL **rakeshgodika@gmail.com, shabaasindia@gmail.com**

तीर्थंकर भगवन्तों की स्तुति कर सर्व मंगल व सुख शांति की कामना

महासाध्वी कुमुदलताजी म.सा. के सानिध्य में अनुष्ठान आराधना में उमड़े श्रावक-श्राविकाएं

भीलवाड़ा. शाबाश इंडिया

अनुष्ठान आराधिका ज्योतिष चन्द्रिका महासाध्वी डॉ. कुमुदलताजी म.सा. आदि ठाणा के सानिध्य में आध्यात्मिक चातुर्मास आयोजन समिति द्वारा सुभाषनगर श्रीसंघ के तत्वावधान में गुरूवार को श्रद्धा एवं भक्ति से परिपूर्ण माहौल में साप्ताहिक अनुष्ठान आराधना का आयोजन किया गया। अनुष्ठान आराधना के तहत 170 तीर्थकरों की स्तुति करने वाले मंत्र ''श्री तिजयपहुत स्त्रोत'' का जाप किया गया। इसके माध्यम से उन सभी तीर्थंकरों की स्तुति की गई जो हो चुके, जिनका शासन चल रहा ओर जो आने वाली चौबीसी में तीर्थंकर बनेंगे। सैकड़ो श्रावक-श्राविकाओं ने शुद्ध भावों के साथ इस स्त्रोत का जाप किया तो पूरा वातावरण पवित्र एवं पावन हो गया ओर असीम पॉजिटिव एनर्जी का संचार हुआ। इस जाप के माध्यम से तीर्थंकर भगवंतों से प्रार्थना की गई कि सबका जीवन आनंदमय ओर शांतिमय हो तथा हर प्रकार का कष्ट दूर हो। अनुष्ठान के शुरू में महासाध्वी मण्डल के सानिध्य में श्री व्रज पंज्जर स्तोत्र की आराधना की गई। अनुष्ठान शुरू होने से पूर्व भगवान महावीर स्वामी की अंतिम देशना उत्तराध्ययन सूत्र के मूल पाठ का वाचन विद्याभिलाषी राजकीर्तिजी म.सा. द्वारा किया गया। साध्वी मण्डल द्वारा दिवाकर चालीसा का पाठ भी कराया गया। साध्वी कुमुदलताजी म.सा. ने दीपावली पर भगवान महावीर निर्वाण कल्याणक के उपलक्ष्य में त्याग तपस्या करने की प्रेरणा देते हुए बताया कि तेला तप की आराधना 19 अक्टूबर से ओर बेला तप की आराधना 20 अक्टूबर से शुरू होगी। दीपावली महोत्सव 21 अक्टूबर को मनाया जाएगा। अनुष्ठान के शुरू में लाभार्थी परिवारों, अतिथियों एवं चातुर्मास समिति एवं सुभाषनगर श्रीसंघ के पदाधिकारियों व श्रावक श्राविकाओं द्वारा नवकार मंत्र चौकी की विधिपूर्वक स्थापना की गई। अनुष्ठान के लाभार्थी स्व. सोहनसिंह सुराणा की पुण्य स्मृति में प्रेमदेवी, राजेन्द्र रेखा, नरेन्द्र, कुशल सुमन सुराना परिवार, चांददेवी, सुभाषचंद, बदामदेवी, महावीर संगीता, ललित नीता बाबेल परिवार, लोकेशकुमार कागरेचा मुंबई, मनोजकुमार मेहता थाणा, छोटीदेवी, लादूलाल, संध्या अंकित सुराना परिवार रहा। समारोह में लाभार्थी परिवारों एवं विशिष्ट अतिथि अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक श्यामसुंदरजी, पुलिस उप अधीक्षक जितेन्द्रसिंह मेड़तिया, पुलिस अधिकारी शिवराज गुर्जर, नेतराम चौधरी,सुरेश खत्री, एनसी जैन, चित्तौड़गढ़ के निलेश पटवारी आदि का स्वागत चातुर्मास समिति के अध्यक्ष दौलतमल भड़कत्या, सचिव राजेन्द्र सुराना, सुभाषनगर श्रीसंघ के अध्यक्ष हेमन्त कोठारी, सुनील नाहर, बंशीलाल बोहरा, मदनलाल सिपानी, विक्रम डूंगरवाल,पवन कोठारी, रोहित कोठारी, महिला मण्डल की निर्मला भड़कत्या, लाड़जी मेहता, लीला कोठारी, लीला सुराना, सीमा नाहर, सुमित्रा बोथरा, पुष्पा गोखरू सहित विभिन्न पदाधिकारियों ने किया। अनुष्ठान में शामिल होने के लिए भीलवाड़ा शहर के साथ बिजयनगर, सहाड़ा, चित्तौड़गढ़ सहित आसपास के विभिन्न क्षेत्रों से श्रावक-श्राविकाएं पहुंचे। कार्यक्रम का संचालन चातुर्मास समिति के सचिव राजेन्द्र सुराना ने किया। अनुष्ठान समाप्ति पर महासाध्वी मण्डल के सानिध्य में आध्यात्मिक चातुर्मास आयोजन समिति एवं सुभाषनगर श्रीसंघ द्वारा 90 दिन की तपस्या पूर्ण करने वाले सादी के नाकोड़ा धाम के पुजारी तपस्वी रत्न धनराज शर्मा का स्वागत अभिनंदन किया गया। उन्होंने गौमूत्र के सहारे पचास दिन की तपस्या पूर्ण करने के बाद साध्वी कुमुदलताजी म.सा. के मुखारबिंद से ही 90 उपवास के प्रत्याख्यान लिए थे। साध्वी मण्डल ने उनके प्रति मंगलभावनाएं व्यक्त की। धनराज शर्मा ने साध्वी मण्डल की प्रेरणा के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हुए उनसे चातुर्मास समाप्ति के बाद सादी नाकोड़ा धाम पधारने की विनती की।

साप्ताहिक पद्मावती एकासन आराधना कल

चातुर्मास में शुक्रवार को साप्तहिक पद्मावती एकासन आराधना विधि का आयोजन होगा। एकासन आराधना में शामिल होने के लिए 550 से अधिक श्राविकाओं एवं श्रावकों ने पंजीयन कराया हुआ है। सुबह नियमित प्रवचन के तुरंत बाद एकासन विधि होगी। एकासन विधि सम्पन्न होने के बाद सामूहिक एकासन चातुर्मास समिति द्वारा कराया जाएगा। पद्मावती एकासन का उद्यापन 31 अक्टूबर को होगा।

सजोड़ा श्री घंटाकर्ण महावीर अनुष्ठान 19 अक्टूबर को

महासाध्वी मण्डल के सानिध्य में 19 अक्टूबर को धन तेरस पर सजोड़ा श्री घंटाकर्ण महावीर अनुष्ठान का आयोजन होगा। सभी प्रकार की व्याधि ओर कष्टों को दूर करने की कामना से होने वाले इस अनुष्ठान में सैकड़ो श्रावक श्राविका शामिल होंगे। आध्यात्मिक चातुर्मास आयोजन समिति भीलवाड़ा द्वारा श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक समिति सुभाषनगर के तत्वावधान में तथा राष्ट्रीय महामंगलकारी अनुष्ठान समिति के प्रायोजन में होने वाला यह अनुष्ठान सुबह 8.15 से 10.30 बजे तक आरसी व्यास कॉलोनी में गेट न.33 के पास स्कूल के नजदीक ग्राउण्ड में होगा।

भगवान के दर्शन से वास्तविक आत्मा के दर्शन होते हैं: आचार्य श्री वर्धमान सागर जी

आगामी 3 नवंबर को होगा पीछी परिवर्तन तथा 7 से 12 नवंबर से होगा पंच कल्याणक

टोंक. शाबाश इंडिया

आत्मा पर कर्मों का आश्रव होकर आत्मा कर्मों के बंधन में है इस कारण संसार में परिभ्रमण होता है संयम दीक्षा धारण करना ही सही मार्ग है इस को अपनाकर वैराग्य धारण कर मनुष्य जीवन सार्थक करने का पुरुषार्थ आचार्य श्री धर्म सागर जी महाराज ने किया। एक संस्मरण में आचार्य श्री वर्धमान सागर जी ने बताया कि आचार्य श्री धर्म सागर जी महाराज मुनि अवस्था में श्री महावीर जी पधारे तब द्वितीय पट्टाधीश आचार्य श्री शिव सागर जी थे जब श्री शिव सागर जी महाराज का स्वास्थ्य खराब हुआ तब अन्य साधुओं ने पूछा कि 11 प्राणियों ने दीक्षा हेतु श्रीफल चढ़ाया उनका क्या होगा? तब श्री शिव सागर जी ने कहा कि मैं स्वस्थ हो जाऊंगा तो मैं दीक्षा दूंगा और अगर मैं स्वस्थ नहीं होता तो मुनि श्री धर्म सागर जी महाराज इन 11 प्राणियों को दीक्षा देंगे। आचार्य श्री शिव सागर जी की भावना अनुरूप आचार्य श्री शिव सागर जी की अनायास समाधि हो जाने से श्री धर्मसागर जी महाराज तृतीय पट्टाधीश नियुक्त किए गए ,और उसी दिन 24 फरवरी 1969 फागुन शुक्ल अष्टमी को 11 व्यक्तियों को दिगंबर दीक्षा दी जिसमें 6 मुनिराज तीन आर्यिका माताजी तथा दो छुल्लक दीक्षाएं दी। सबसे कम उम्र में हमारी भी मात्र 19 वर्ष में सीधे मुनि दीक्षा हुई। यह मंगल देशना टोंक नगर की धर्म सभा में आचार्य श्री धर्म सागर सभागार के लोकार्पण अवसर पर आयोजित सीकर से लाइव प्रसारण पर प्रगट की। राजेश पंचोलिया अनुसार आचार्य श्री ने आगे बताया कि आचार्य पद के पूर्व भी अनेक नगरों में समाज ने श्री धर्म सागर जी को आचार्य पद देना चाहा किंतु उन्होंने स्पष्ट मना किया कि हम धर्म प्रभावना तीर्थ वंदना के लिए पृथक बिहार कर रहे हैं हमारे संघ परंपरा के आचार्य श्री शिव सागर जी ही है। श्री धर्म सागर जी महाराज ने अनेक दीक्षाएं दी अनेक नगरों में चातुर्मास के बाद सन 1987 वैशाख माह में सीकर पधारे सीकर ग्रीष्म ऋतु में आपने अघोषित संलेखना के अंतर्गत प्रतिदिन आहार को कम करते रहे और आपके समाधि हो गई आज उनकी पुनीत स्मृति में आचार्य श्री धर्म सागर सभागार का लोकार्पण हुआ। इसी पार्श्वनाथ भवन में 4 माह रुके प्रतिमाह 8 km बिहार कर रात्रि विश्राम कर अगले दिन आहार लेकर सीकर आते थे। जिस दिन आपकी दीक्षाहुई उस दिन श्री धर्मनाथ भगवान का कल्याणक तथा समाधि के दिन भी भगवान का कल्याणक दिवस था। आचार्य श्री ने बताया कि भगवान के दर्शन से आत्म दर्शन होते हैं, आत्म दर्शन ही वास्तविक दर्शन है आचार्य श्री शांति सागर परम्परा के सभी आचार्य बाल ब्रह्मचारी है सन 1974 देहली में भगवान श्री महावीर स्वामी के 2500 निर्वाण महोत्सव में दिगम्बर समाज का प्रमुख आचार्य होकर प्रतिनिधित्व किया। कभी भी दिगम्बर समाज के हितों से समझौता नहीं किया। आपने सीकर समाज को आचार्य श्री धर्म सागर जी के समाधि स्थल के नवीनीकरण किए जाने की प्रेरणा दी। कार्यक्रम संचालक कमल सराफ और समाज प्रवक्ता पवन कंटान अनुसार टोंक नगर में 7 नवंबर से 12 नवंबर तक होने वाली पंचकल्याणक प्रतिष्ठा के पत्रिका का विमोचन पुरानी टोंक मंदिर के पदाधिकारी एवं आचार्य श्री ने किया। पंचकल्याणक समिति के पदाधिकारी ने संपूर्ण जैन समाज को कार्यक्रम में सादर आमंत्रित किया। आज आचार्य श्री वर्धमान सागर जी महाराज के ससंघ के सानिध्य में श्रेष्ठी मोहनलालजी जैन पुना छामुनिया, टोंक को आचार्य वर्धमान सागर जी महाराज वर्षायोग समिति ने 'वात्सल्यभक्त' की उपाधि से नवाज कर सम्मान कर अभिनंदन पत्र भेंट किया। आचार्य वर्धमान सागर जी महाराज की आहार चर्या प्रेमचंद अशोक कुमार जैन झीराना वाले महावीर नगर में भी हुई आचार्य श्री वर्धमान सागर जी सहित 34 साधुओं का पीछी परिवर्तन 3 नवंबर को श्री आदिनाथ नसिया में होगा।

"आओ खुशियां बांटे" 180 जरूरतमंद हुए लाभान्वित

अजमेर. शाबाश इंडिया

दीपावली पर्व के अवसर पर प्रांतीय स्लोगन आओ खुशियां बांटे को चरितार्थ करते हुए लायंस क्लब अजमेर आस्था द्वारा समाजसेवी लायन राकेश पालीवाल,लायन अतुल पाटनी, लायन मधु पाटनी एवं अन्य भामाशाहों के सहयोग से जयपुर रोड अजमेर के स्लम एरिया भूनाबाय ,कांकरिया के अंदरूनी एवं पहाड़ी क्षेत्र में रहने वाले 150 से अधिक जरूरतमंद परिवार के बच्चो को एवं रेलवे ब्रिज एवं कचहरी रोड एलिवेटेड रोड के नीचे जीवन बसर कर रहे 30 व्यक्तियों, खानाबदोशों एवं अन्य को नए वस्त्र की सेवा देकर खुशियां दी। क्लब अध्यक्ष लायन मुकेश कर्णावट ने बताया कि कार्यक्रम संयोजक लायन अतुल पाटनी के संयोजन में स्थानीय सामाजिक कार्यकर्ता अंजू तूनवाल गुरु चंद चरण तूनवाल एवं प्रभु गढ़वाल के माध्यम से इस क्षेत्र की आंगनवाड़ी के बच्चो,मजदूर वर्ग के व्यक्तियों को एवं अन्य जरूरतमंदो को सम्मान के साथ सेवा का वितरण किया गया। क्लब की सेवा पाकर लाभार्थियों ने खुशी का इजहार किया।

वेदांता के नंद घर द्वारा 1 लाख बच्चों को 'शिशु संजीवनी' वितरित किए जाएंगे

नई दिल्ली

बच्चों के समग्र पोषण को बढ़ावा देने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम उठाते हुए, वेदांता की प्रमुख सामाजिक पहल नंद घर ने नेशनल डेयरी डेवलपमेंट बोर्ड (NDDB) – फाउंडेशन फॉर न्यूट्रिशन के सहयोग से 'शिशु संजीवनी' नामक पोषक अनुपूरक के लगभग 1,00,000 पैक देश के 7 राज्यों में पोषण माह 2025 के दौरान वितरित करने की घोषणा की है। यह अनुपूरक 3 से 6 वर्ष की आयु के बच्चों के लिए तैयार किया गया है। नंद घर देशभर में 15 राज्यों में 9,400 से अधिक आधुनिक आंगनवाड़ियों के माध्यम से महिलाओं और बच्चों के जीवन को पोषण, शिक्षा, स्वास्थ्य और सशक्तिकरण के माध्यम से बदल रहा है। यह वर्ष एकीकृत बाल विकास सेवा (ICDS) के 50 वर्ष पूरे होने का भी प्रतीक है।प्रिया अग्रवाल हेब्बर, चेयरपर्सन, हिंदुस्तान जिंक लिमिटेड और नॉन-एग्जीक्यूटिव डायरेक्टर, वेदांता लिमिटेड ने कहा, "नंद घर के माध्यम से हमारा संकल्प है कि हर बच्चे को सही पोषण, गुणवत्तापूर्ण प्रारंभिक देखभाल और जीवन की समान शुरुआत मिले। NDDB के साथ 'शिशु संजीवनी' पहल हमारी साझेदारी की ताकत को दर्शाती है – क्योंकि पोषण ही अवसर की पहली सीढ़ी है। आज का पोषित बच्चा कल का सशक्त और आत्मविश्वासी 'विकसित भारत' बनाएगा।" शशि अरोड़ा, सीईओ, नंद घर ने कहा, "फोर्टिफाइड फूड, तकनीकी निगरानी और सामुदायिक जागरूकता को जोड़कर हम भारत को 2047 तक 'विकसित भारत' बनाने की दिशा में योगदान दे रहे हैं।" डॉ. मीनेश शाह, चेयरमैन एवं प्रबंध निदेशक, NDDB ने कहा, "नंद घर के साथ साझेदारी के माध्यम से हम इसे देश के हर कोने में पहुँचाकर एक स्वस्थ, पोषित और सक्षम भारत के निर्माण में योगदान देना चाहते हैं।"

रणक्षेत्र में अभिमन्यु सा

मैं रणक्षेत्र में खड़ा हूं, निहत्था अभिमन्यु सा।
चारों ओर शोर है, आलोचनाओं का, छल का, और पराजय की भविष्यवाणियों का।
हर व्यक्ति अपने-अपने स्वार्थों के कवच में लिपटा हुआ है,
कोई मित्रता के नाम पर धोखा देता है, कोई धर्म के नाम पर प्रपंच रचता है।
पर मैं अब भी डटा हूं, क्योंकि मेरी लड़ाई किसी व्यक्ति से नहीं –
अपने कर्तव्य, अपने धर्म, और अपने आत्म-सत्य से है।
मैं चक्रव्यूह में फंसा हूं, हर मार्ग पर बंदिशें हैं,
हर दिशा से संदेह और तानों के बाण चल रहे हैं।
फिर भी मेरी दृष्टि केवल कृष्ण की ओर है।
क्योंकि जब मनुष्य हर ओर से हारने लगता है,
तब वही एकमात्र सच्चा सहारा होता है जो दृष्टि से परे है –
जो मन में है, जो विश्वास में है।
कभी-कभी लगता है, जैसे जीवन का यह रणक्षेत्र केवल मेरा नहीं,
हर उस इंसान का है जो सच्चाई के साथ खड़ा है,
जिसने परिस्थितियों से समझौता करने से इनकार किया है।

अभिमन्यु की तरह मैं भी जानता हूं कि यह मार्ग कठिन है,
पर अधूरा नहीं।
मेरी हर चोट, हर अपमान, हर आरोप –
मेरे साहस की गवाही दे रहे हैं।
लोग कहते हैं, "तुम अकेले क्या कर लोगे?"
पर मैं मुस्कुरा देता हूं, क्योंकि इतिहास ने यह सिखाया है –
कभी-कभी एक अकेला व्यक्ति भी पूरी व्यवस्था को झुका देता है।
अभिमन्यु मरा नहीं था, वह तो अमर हो गया था,
क्योंकि उसने युद्ध छोड़ने के बजाय अंत तक लड़ने का चयन किया था।
और मैं भी वही कर रहा हूं –
चाहे हार मिले या सम्मान, मैं पीछे नहीं हटूंगा।
जीवन का सत्य यही है
कभी-कभी निहत्थे होकर भी धर्म की रक्षा करनी पड़ती है।
कभी-कभी अकेले होकर भी सबका भार उठाना पड़ता है।
और कभी-कभी कृष्ण को निहारते हुए
अपने भीतर के भय को हराना पड़ता है।
मेरे लिए यही धर्म है, यही साधना, यही संकल्प
कि जब तक श्वास है,
अन्याय, झूठ, और दिखावे के विरुद्ध यह युद्ध चलता रहेगा।
क्योंकि रणक्षेत्र केवल कुरुक्षेत्र में नहीं होता,
वह तो हर उस दिल में जन्म लेता है जो सत्य के लिए डट जाता है।

नितिन जैन
संयोजक – जैन तीर्थ श्री पार्श्व पद्मावती धाम, पलवल (हरियाणा)

दिगंबर जैन महासमिति, का द्वितीय मासिक अभिषेक एवं पूजन विधान कार्यक्रम मुरलीपुरा जैन मन्दिर में हुआ सम्पन्न

जयपुर. शाबाश इंडिया

दिगंबर जैन महासमिति राजस्थान अंचल द्वारा द्वितीय मासिक अभिषेक एवं पूजन विधान कार्यक्रम मुरलीपुरा जैन मन्दिर में सम्पन्न हुआ। महासमिति महिलांचल अध्यक्ष शकुंतला बिंदायक्या ने बताया कि श्री महावीर दिगंबर जैन मंदिर, मुरलीपुरा में दिगंबर जैन महासमिति राजस्थान अंचल एवं महिलांचल राजस्थान द्वारा द्वितीय मासिक अभिषेक एवं पूजन विधान कार्यक्रम का भव्य आयोजन महासमिति के 50 वे स्थापना दिवस की शुभ अवसर पर अत्यंत श्रद्धा, भक्ति और उत्साह के साथ संपन्न हुआ। महिलांचल मंत्री सुनीता गंगवाल ने बताया कि कार्यक्रम का शुभारंभ पूजन विधान का कार्यक्रम मुख्य समन्वयक राजेश बड़जात्या ने शांति धारा कर विधिवत किया। तत्पश्चात दीप प्रज्वलन सुरेश, नीरज, पंकज, रेखा, निशा अलवर वालों ने तथा मुख्य मंगल कलश का पुण्यार्जन निरंजन कुमार एवं निर्मला पहाड़िया (बानूड़ा, सीकर वाले) तथा चार कोणों के चार मंगल कलश अनंत एवं स्वाति जैन (आदि ऑप्टिकल्स वाले), कुलभूषण एवं विद्या देवी गोधा, राकेश एवं अंजना जैन (सवाई माधोपुर वाले), मोहनलाल एवं संगीता पाटनी एवं अन्य कलश श्रीमती मंजू धर्मचंद जैन, श्रीमती सुलेखा जैन द्वारा किया गया। महिलांचल कोषाध्यक्ष उर्मिला जैन ने बताया कि पूजन सामग्री के पुण्यार्जक आदरणीय श्रेष्ठी सुरेशचंद जैन (अलवर वाले) थे तथा श्रीमती मिश्रा देवी छाबड़ा ने आगामी माह की पूजन सामग्री हेतु अपना नाम दर्ज कराया। महावीर विधान पंडित नवीन जी (सांगानेर वाले) के मार्ग दर्शन में हुआ । गायक कलाकार महेश (महुआ वाले) की भक्ति प्रस्तुति ने भक्ति और उल्लास का अद्भुत वातावरण बना दिया। उपस्थित महासमिति के सदस्य गण भक्ति रस में सराबोर होकर नाचते-गाते पूजन में शामिल हुए। प्रबंध समिति श्री महावीर दिगंबर जैन मंदिर मुरलीपुरा के अध्यक्ष धर्मचंद जैन एवं मंत्री नीरज जैन का मंदिर जी द्वारा प्रदत उत्कृष्ट व्यवस्था हेतु महासमिति द्वारा धन्यवाद एवं आभार व्यक्त किया गया । कार्यक्रम में महावीर बिंदायका, रमेश गंगवाल, पवन जैन पांड्या (अध्यक्ष झोटवाड़ा संभाग), अंचल युवा प्रकोष्ठ मंत्री डॉ. भागचंद जैन शास्त्री (धार्मिक कार्यक्रम चेयरमैन), सुनील बज (अध्यक्ष, दिगंबर जैन सोशल ग्रुप फेडरेशन राजस्थान रीजन), एवं अनेक गणमान्य सदस्यगण उपस्थित रहे । कार्यक्रम में सचिव सुनीता गंगवाल ने भी भक्ति में सहभागिता कर समां बांध दिया। महिलांचल अध्यक्ष श्रीमती शकुंतला बिंदायका ने मुरलीपुरा समाज को व्यवस्था हेतु आभार व्यक्त किया। महिलांचल कोषाध्यक्ष श्रीमती उर्मिला जैन ने कहा कि ''यदि समाज में ऐसी धार्मिक भावनाएं निरंतर बनी रहें, तो धर्म और पुण्य की धारा अनवरत बहती रहेगी।'' अंचल कार्याध्यक्ष एवं मुख्य समन्वयक राजेश-सीमा बड़जात्या ने अवगत कराया कि अंचल अध्यक्ष अनिल जैन IPS, निवर्तमान अध्यक्ष उत्तमचंद पांड्या, महामंत्री महावीर बाकलीवाल, परामर्शक सुरेन्द्र जी पांड्या (राष्ट्रीय महामंत्री) के मार्गदर्शन में यह कार्यक्रम शुरू किया गया था तथा आज द्वितीय मासिक पूजन विधान कार्यक्रम पूर्ण श्रद्धा, संगठन भावना एवं भक्ति के वातावरण में अत्यंत सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ।

देशना जैन ने Under 15 स्टेट बैडमिंटन टूर्नामेंट में दो स्वर्ण व एक रजत पदक जीता

जयपुर। जोधपुर में संपन्न हुई योनेक्स सनराइज राजस्थान स्टेट जूनियर अंडर 15 चैंपियनशिप बैडमिंटन में जयपुर की देशना जैन (सुपुत्री राजीव - प्रतिभा गोदिका) ने शानदार प्रदर्शन कर दो स्वर्ण व एक रजत पदक जीते। गर्ल्स फाइनल सिंगल में देशना जैन ने लक्षिता भारद्वाज को 21/1721/12 से हराया तथा गर्ल्स डबल में देशना जैन व अद्विका शर्मा की जोड़ी ने लक्षिता भारद्वाज व यारा गोयल की जोड़ी को 21/12 , 21/9 से हराया। मिक्स डबल के फाइनल में देशना जैन व रुद्राक्ष की जोड़ी ने अंशुमन व अद्विका की जोड़ी से रोमांचक फाइनल में 22/20 13/21 21/16 से हार कर रजत पदक से संतोष करना पड़ा। देशना जैन 1 से 6 दिसंबर भुवनेश्वर में होने वाली राष्ट्रीय प्रतियोगिता में राजस्थान का प्रतिनिधित्व करेगी।

जैन समाज मनायेगा विश्व वन्दनीय भगवान महावीर स्वामी का 2552वां निर्वाणोत्सव 21 अक्टूबर को

राजस्थान जैन सभा द्वारा भट्टारक जी की नसियां में होगा मुख्य आयोजन

दिगम्बर जैन मंदिरों में होंगे पूजा अर्चना निर्वाण लाडू के विशेष आयोजन

जयपुर. कासं

विश्व वन्दनीय, जैन धर्म के 24 वें तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी का 2552 वां निर्वाणोत्सव मंगलवार 21 अक्टूबर को भक्ति भाव से मनाया जाएगा। इस मौके पर भट्टारक जी की नसियां में राजस्थान जैन सभा जयपुर द्वारा मुख्य आयोजन तथा शहर के दिगम्बर जैन मंदिरों में पूजा अर्चना के विशेष आयोजन होंगे। राजस्थान जैन सभा जयपुर के अध्यक्ष सुभाष चन्द जैन एवं महामंत्री मनीष बैद ने बताया कि मुख्य आयोजन राजस्थान जैन सभा जयपुर द्वारा नारायण सिंह सर्किल स्थित भट्टारक जी की नसियां में होगा। कार्यक्रम के लिए पदम चन्द बिलाला, सुधीर गंगवाल, धीरज पाटनी, अनिल पाटनी, नीतू जैन एवं वर्षा अजमेरा को संयोजक बनाया गया है। सभा के उपाध्यक्ष विनोद जैन 'कोटखावदा' ने बताया कि प्रातः 8.15 बजे से होने वाले इस सामूहिक आयोजन में भगवान महावीर की संगीतमय पूजा अर्चना के बाद प्रातः 9.15 बजे मंत्रोच्चार के साथ मोक्ष का प्रतीक निर्वाण लाडू चढाया जायेगा। महाआरती के बाद समापन होगा।

निर्वाण लाडू महोत्सव पर दिगम्बर जैन मन्दिरों में होंगे विशेष आयोजन: राजस्थान जैन युवा महासभा जयपुर के प्रदेश अध्यक्ष प्रदीप जैन एवं प्रदेश महामंत्री विनोद जैन 'कोटखावदा' ने बताया कि मंगलवार, 21 अक्टूबर को भगवान महावीर का मोक्ष कल्याणक दिवस एवं 2552 वां निर्वाणोत्सव मनाया जाएगा। जैन के मुताबिक उत्तर पुराण में आचार्य गुणभद्र (7- 8 वीं शताब्दी) ने लिखा

है कि 15 अक्टूबर,527 बीसीई कार्तिक कृष्णा अमावस्या स्वाति नक्षत्र के उदय होने पर भगवान महावीर ने सुप्रभात की शुभ बेला में अघातिया कर्मों को नष्ट कर निर्वाण प्राप्त किया था।उस समय दिव्यात्माओं ने महावीर प्रभू की पूजा की और अत्यंत दीप्तिमान जलती प्रदीप-पंक्तियों के प्रकाश में आकाश तक को प्रकाशित करती हुई पावां नगरी सुशोभित हुई। सम्राट श्रेणिक आदि नरेन्द्रों ने अपनी प्रजा के साथ निर्वाण उत्सव मनाया।उसी समय से प्रति वर्ष महावीर जैनेन्द्र के निर्वाण को अत्यंत भाव एवं श्रद्धा पूर्वक मनाया जाकर नैवेद्य (लाडू) से पूजा की जाती है। जैन ने बताया कि इसका उल्लेख प्रसिद्ध जैन ग्रंथ हरिवंश पुराण में भी हैं।जैन धर्म के तेईसवें तीर्थंकर भगवान पार्श्वनाथ के 256 वर्ष साढ़े तीन माह बाद महावीर का जन्म हुआ था।72 वर्ष की उम्र के अन्त में श्री शुभ मिती कार्तिक कृष्णा चतुर्दशी के अन्त समय (अमावस्या के अत्यंत प्रातः काल) स्वाति नक्षत्र में मोक्ष लक्ष्मी को प्राप्त किया।उसी समय भगवान महावीर के प्रथम गणधर श्री गौतम स्वामी को केवल ज्ञान रुपी लक्ष्मी प्राप्त हुई और देवों ने रत्नमयी दीपकों का प्रकाश कर उत्सव मनाया। शहर के 250 से अधिक दिगम्बर जैन मंदिरों में पूजा अर्चना एवं भगवान महावीर निवाणोत्सव के विशेष आयोजन होगें ।